देसहरियाणा
ISSN : 2454-6874
साहित्यिक-सांस्कृतिक अभिव्यक्ति का मंच
अंक 50 जनवरी-फरवरी, 2024

संपादक **सुभाष सैनी**

सम्पादन सहयोग जयपाल, कृष्ण कुमार, अरुण कैहरबा, राजकुमार जांगड़ा, विकास साल्याण, गगनदीप सिंह

सलाहकार प्रो. टी.आर. कुंडू, सुरेन्द्रपाल सिंह, परमानंद शास्त्री, अशोक भाटिया, सत्यवीर नाहड़िया

प्रबंधन कीर्ति सैनी, योगेश शर्मा, गुरदीप भोंसले

प्रकाशक सत्यशोधक फाउंडेशन, 912 सैक्टर-13, कुरुक्षेत्र हरियाणा

संपर्क सुभाष चंद्र - 94164-82156

Email haryanades@gmail.com

Website desharyana.in

सहयोग राशि एक प्रति ₹ 50 मात्र

व्यक्तिगत: ₹300 (वार्षिक) संस्था: ₹500 (वार्षिक)
(पंजीकृत डाक खर्च समेत)

आजीवन: ₹5000 संरक्षक: ₹10000

ऑनलाईन
भुगतान के लिए

Account Name Satyashodhak Foundation
Bank Name Indian Bank, Sector -13
Account No. 50490177180
IFSC: IDIB000K849

प्रकाशित रचनाओं में प्रस्तुत विचार एवं दृष्टिकोण से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं।
सम्पादक एवं संचालन अव्यवसायिक एवं अवैतनिक, समस्त कानूनी विवादों का न्याय-क्षेत्र कुरुक्षेत्र न्यायालय होगा।
स्वामी-प्रकाशक-मुद्रक सत्यशोधक फाउंडेशन, 912, सैक्टर-13, कुरुक्षेत्र हरियाणा

इस बार...

- **दो हरफी बात** 3
- **कहानी**
  सतीश सरदाना - लुटलुटी 5
- **विरासत**
  लाल सिंह दिल - जयपाल (अनुवाद) 24
- **यात्रा**
  सुरेंद्र पाल सिंह - श्री करतारपुर साहब की यात्रा 27
- **स्मृति**
  बलविन्दर 'बालम' - मेरे उस्ताद 30
- **हिंद के सितारे**
  अमरनाथ - काँशीराम 37
  जवाहर लाल नेहरू - आजादी का अर्थ 44
- **कविताएं**
  एस. एस. पंवार, ईशम सिंह, कपिल भारद्वाज, राजेश भारती 51
- **अभी मैंने जो पढ़ा**
  गौरव - भारत और उसके विरोधाभास 54
- **नई कलम**
  प्रियंका भारती - समानता के लिए आरक्षण जरूरी 45
  सुनील कुमार - स्टीफन हॉकिंग को याद करते हुए 57
- **लोकधारा**
  सोनिया सत्या नीता – गुग्गा पीर की छड़ी 60
- **गतिविधियां**
  लेखक सत्य और सौंदर्य का शहद बनाता है 62

पाठको, आपका आभार, शुक्रिया व धन्यवाद।

कौन कहता है कि तुझको हर खुशी मिल जाएगी,
हां मगर इस राह में मंज़िल नई मिल जाएगी।
अपनी राहों में अंधेरा तो यक़ीनन है मगर,
हम युँही चलते रहे तो रोशनी मिल जाएगी।
यूँ अंधेरी बंद गलियों में खड़े हो किस लिये,
बढ़ के दीवारों को तोड़ों, राह भी मिल जाएगी।
अपनी मंज़िल है घने गहरे अंधेरों से परे,
ये अंधेरे पार कर लो, रोशनी मिल जाएगी।

बलबीर सिंह राठी

देसहरियाणा का पचासवां अंक आपके हाथ में सौंपते हुए बेहद खुशी हो रही है और देस हरियाणा की उपलब्धियों को सांझा करने का अवसर भी है। देसहरियाणा पत्रिका का सफर सितंबर 2015 में भाषा-विशेषांक से शुरु हुआ था। पत्रिका प्रकाशित करने को लेकर तत्कालीन शासन-सत्ता का अभिव्यक्ति के प्रति रवैया और पत्रिकाओं के निकलने-बंद होने के कटु-अनुभवों के आधार पर अधिकांश लोगों को पत्रिका की निरंतरता पर आशंकाएं थीं, लेकिन देसहरियाणा टीम के उत्साह व प्रतिबद्धता के कारण कमोबेश निरंतरता बनी रही, जिसकारण पत्रिका के मुखपृष्ठ पर अंक 50 छपा देखकर खुशी हो रही है और टीम का विश्वास है कि अंक 100 लिखा भी देखना है।

देसहरियाणा पत्रिका के बारे में अतिश्य कथन नहीं है कि यह सांस्कृतिक आंदोलन की तरह से अपने परिवेश व पाठकों के बीच उपस्थित रही है। पत्रिका और इसके आस पास हो रही गतिविधियों ने पाठकों, लेखकों, संस्कृतिकर्मियों व साहित्यकर्मियों सहित अनेक लोगों को प्रेरित किया है। असल में इन सबकी पत्रिका में दिलचस्पी और जुड़ाव का मुख्य कारण रहा इसकी गतिविधियों में बौद्धिक उर्जा का प्रवाह।

देसहरियाणा के चाहे सोशल मीडिया के मंच हों या भौतिक रूप में गतिविधियां साथियों का सहयोग व जीवंत भागीदारी हमेशा बनी रही। देसहरियाणा द्वारा आयोजित लेखकों से रू-ब-रू, रचनात्मक गोष्ठियां, समीक्षात्मक गोष्ठियां, कार्यशालाएं निरंतर होतीं रही। लेखकों समाज सुधारकों, क्रांतिकारियों की जंयतियों-पुण्यतिथियां बौद्धिक विमर्श के अवसरों के

रूप में बने। इन संगोष्ठियों में शानदार व सामयिक विमर्श हुआ। पत्रिका ने समय के साथ कदम ताल मिलाते हुए इंटरनेट और सोशल मिडिया पर भी अपनी उपस्थिति दर्ज कराई और पत्रिका की वेबसाईट desharyana.in खूब प्रसिद्ध हुई। जिस पर पत्रिका के अलावा भी साहित्यिक सामग्री उपलब्ध रहती है।

देसहरियाणा द्वारा आयोजित हरियाणा सृजन उत्सव व साहित्यिक यात्राओं का जिक्र किये बिना शायद देसहरियाणा के ऊर्जा-स्रोत को पूर्णतः रेखांकित नहीं किया जा सकता। देसहरियाणा के बैनर तले अभी तक 'हरियाणा सृजन उत्सव' के केवल चार संस्करण हुए हैं। इनमें साहित्यकारों, रंगकर्मियों, सिनेमाकारों, लोक कलाकारों, बुद्धिजीवियों व सामाजिक कार्यकर्त्ताओं की सक्रिय भागीदारी की स्मृति ही आल्हादित करती है। जीवंत व प्रखर बहस, विमर्श, वक्तव्य व सांस्कृतिक प्रस्तुतियों की अमिट छाप है। इस दौरान असगर वजाहत, बंजरंग बिहारी तिवारी, अनिल चमड़िया, सुरजीत पातर, उर्मिलेश, योगेंद्र यादव, मलखान सिंह, रत्नकुमार सांभरिया, आलोक श्रीवास्तव, विभास वर्मा, पल्लव, अरुण कुमार, चौथीराम यादव, जगमोहन सिंह, सुमेल सिंह सिद्धू, कनक तिवारी, गौहर रजा, जोगा सिंह, विकास नारायण राय, यशपाल शर्मा, हरविंद्र मलिक, सुभाष गाताड़े, सोना चौधरी, अनुराधा बेनीवाल, ज्ञान प्रकाश विवेक, रामस्वरूप किसान तथा हरियाणा के अनेक महत्वपूर्ण सृजनकार शामिल रहे। कोरोना महामारी के दौरान यह सिलसिला टूट गया, लेकिन इन्हें फिर से दोहराने की ललक देसहरियाणा टीम में है।

साहित्यिक यात्रा में हाली पानीपती, बाबू बालमुकुंद गुप्त, संत गरीबदास तथा बाबा फरीद के स्थानों पर जाकर गोष्ठियां करना भी एक नये उत्साह का संचार करता है। कुरुक्षेत्र में गुरुनानक, गुरु गोबिंद सिंह, बौद्ध विहार तथा शेख चिल्ली के मकबरे की यात्रा व गोष्ठियां भी यादगार कार्यक्रम रहे हैं।

उपलब्धियां अनेक हैं, जो देसहरियाणा की टीम के अनुभवों में है, जिन्हें यहां रेखांकित करना अपनी पीठ थपथपाने वाली बात लग सकती है। देसहरियाणा के पास न तो कोई सरकारी अनुदान है, न व्यापारिक संस्थानों की सहायता है और न ही किसी प्रकार की अन्य आमदनी है। टीम व पाठकों के सहयोग से ये चल रही है। यह बात सही है कि संसाधन कम हैं, लेकिन यह बात भी उतनी ही सही है कि संसाधनों की कमी नहीं है।

देसहरियाणा के पचास अंक प्रकाशित हुए हैं। यह भी ऊर्जा का स्रोत है। इस ऊर्जा का उपयोग करके देसहरियाणा व्यवस्थित व निरंतर तौर पर चलेगी इसकी उम्मीद है। पाठकों व शुभचिंतकों से सहयोग मिलता रहेगा इस उम्मीद के साथ पचासवां अंक आपके हाथों में है।

पाठको, आपका आभार, शुक्रिया व धन्यवाद।

- सुभाष सैनी

लुटलुटी

सतीश सरदाना

राजबीर थानेदार जाति से जाट था। वह इंसानों और घटनाओं को जातीय खाँचे में फिट करके सोचने का आदी था। वह कोई सीधा थानेदार भर्ती नहीं हुआ था बल्कि कांस्टेबल से तरक्की पाकर पहले हवलदार, फिर ए एस आई, फिर सब इंस्पेक्टर और फिर तरक़्क़ी पाकर इंस्पेक्टर बना था। उसे अच्छी तरह से मालूम था कि तरक्की की सीढ़ियां चढ़ने में जातीय समीकरण किस तरह से काम आते हैं। यदि मुख्यमंत्री जाट हो तो जाट जाति के लोगों, विशेषकर किसानों और कर्मचारियों के दैनिक व्यवहार में कितना अंतर आ जाता है। मुश्किल चीजें आसान हो जाती हैं। धीमे और अटक अटक कर चलने वाली सरकारी मशीनरी में जाति ग्रीस का काम करती है और काम फटाफट होने लगते हैं। उनके हरियाणा में ज्यादातर मुख्यमंत्री जाट हुए थे इसलिए उसकी सोच बन गई थी कि राज चाहे किसी भी पार्टी का रहे लेकिन मुख्यमंत्री जाट ही होना चाहिए।

उसे मालूम था कि पूरे हरियाणा में जाति को लेकर जितने भी चुटकुले चलते हैं, सुने और सुनाए जाते हैं उनमें से अधिकांश में जाटों का मखौल उड़ाया जाता है। लेकिन गाँव देहात के पालन पोषण ने उसे सहृदय बनाया था कि वह ऐसे चुटकुलों पर हँस लेता था। कोई न कोई जवाब भी दे देता था। उसका खून न जलता था, न ही वह लड़ने झगड़ने या मार पिटाई पर उतारू होता था।

राव धनपत खाली नाम का ही धनपत न था। सत्तर साल की उसकी आयु अठन्नी-चवन्नी गिनने से लेकर करोड़ों गिनने में ही बीती थी। उसके हिसाब से कोई ऐसा काम जिसमें दो पैसे का फायदा न हो करना व्यर्थ है। और कोई ऐसा काम जिसमें दो पैसे का खर्चा हो उसका जिक्र भी करना गुनाह है। इसलिए वह कभी मंदिर न जाता था। शादी कर देने के बाद कभी बेटियों के घर नहीं झांका था।

भिखारियों, साधुओं को दान पुण्य उसने आखिरी बार अपनी पत्नी के मरने पर किया था वह भी इस आशा से कि उसकी पत्नी इससे स्वर्ग पहुंचेगी और उसकी राह देखेगी। अपने

स्वर्ग पहुँचने के बारे में वह इतना निश्चिंत था मानो मौत के बाद वह गुड़गांव जाकर स्वर्ग की सीधी बस पकड़ेगा और पहुँच जाएगा।

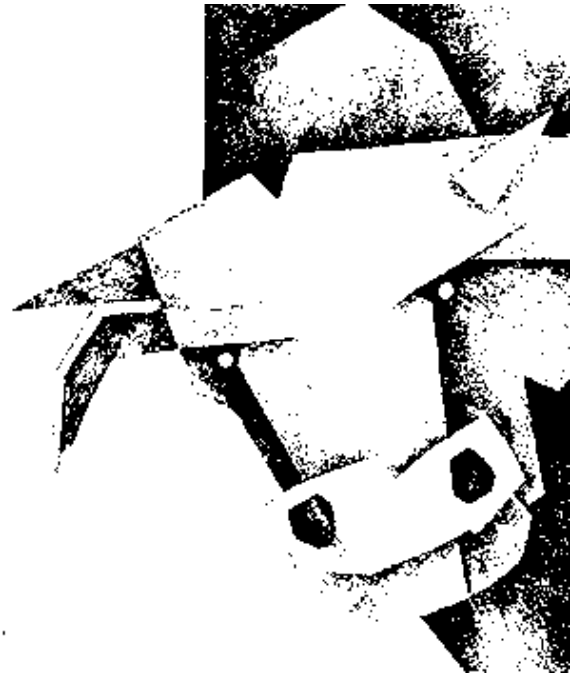

गहलड सिंह ठाकुर फौज में सूबेदार पद से रिटायर हुआ था। अच्छी खासी पैंशन पाता था। बड़ी बड़ी मूंछे उसने रखी हुई थी जिन पर ताव देते रहना उसका प्रिय शगल था। उसका प्रिय शब्द' हरामजादे' था जिसे वह जहाँ तहाँ इस्तेमाल करता रहता था। अगर वह गुस्से में होता तो तेज फटकारती आवाज में 'हरामजादे' बोलता था। अगर वह किसी अपने से लाड़ में बात कर रहा होता तो बड़े प्यार से हरामजादे बोलता था। उसकी जवानी के दिनों की बड़ी अफवाहें प्रचलित थी कि कैसे वह राव धनपत के भाई राव लखपत की पत्नी को अपने साथ ड्यूटी की जगह पर ले गया था। तीन साल तक अपनी पत्नी बना कर रखा था। बदले में अपनी तीन एकड़ उपजाऊ जमीन उसके नाम कर दी थी। राव लखपत के तीन लड़कों में कम से कम एक लड़का उसका था। राव लखपत आजकल शहर की नामी गिरामी हस्ती था। उसके लड़को में एक डॉक्टर, एक इंजीनियर और एक प्रोफेसर था। उन दिनों भी वह अच्छा खाता पीता व्यक्ति होगा इसलिए इस अफवाह पर लोग ज्यादा ध्यान न देते थे लेकिन बड़े बूढ़े दबी जबान में इसे सच बताते थे। अब हालात यह थे कि गहलड़ सिंह अपनी दस एकड़ जमीन ठिकाने लगा चुका था। उसके दोनों लड़के निकम्मे निकले थे। पेंशन से भी गुजारा न चलता था। इसलिए आय बढ़ाने के उद्देश्य से गहलड़ सिंह बैंक में गनमैन की नौकरी करके सोलह हजार मासिक पाता था। आते जाते ग्राहक उसे ठाकुर साहब या गार्ड साहब कहते तो उसका सीना गर्व से फूल जाता। किसी किसी बद्तमीज ग्राहक से बहस करने के दौरान वह भरसक प्रयत्न करता था कि उसके मुँह से 'हरामजादे' न

निकले। क्योंकि एक बार उसकी हेड क्वार्टर में शिकायत हो चुकी थी। लेकिन कंट्रोल करते करते भी एक आध बार यह शब्द जुबान पर आ ही जाता था।

गांव का पुराना नाम खरखौदा था लेकिन नया नाम नवाबपुर ही सरकारी कागजों में दर्ज था। पुराने लोग अभी भी खरखौदा कहते। नवाबपुर शहर से पाँच किलोमीटर दूर एक लिंक रोड पर था। शहर से आने जाने के लिए टेम्पो चलते थे जिसे ज्यादातर मुदगल ब्राह्मण चलाते। मुदगल ब्राह्मणों के गाँव में कोई सौ एक घर थे लेकिन जमीन एक आध को छोड़कर बाकी किसी के पास नहीं थी। दो चार लड़के लायक निकले थे जो शहर में नौकरी करते थे। एक वकील था, एक सी ए और एक दांत का डॉक्टर बाकी सब कम पढ़े लिखे ऊँची जाति का होने के अभिमान से ग्रसित संकुचित सोच वाले व्यक्ति थे। घर में पैसा हो न हो, नौकरी, रोजगार हो न हो थे तो वो राजऋषि मुदगल की संतान ही जिन्होंने 108 उपनिषदों में से एक मुदगल उपनिषद लिखा था और जिसके शाप से ऋषि मुदगल की पत्नी अगले जन्म में पाँच पतियों वाली द्रौपदी बनी थी। इसलिए जरूरी था कि वे चाहे टेंपो चलायें। दस दस रुपये भाड़े के लिए सवारियों की बाट जोहें या शराब पीकर नाली में पड़े रहें, सबको उनका सम्मान करना ही चाहिए। यह नहीं कि सभी ब्राह्मण ऐसे ही थे। उनमें से ही एक गणेश मुदगल जिसकी जवानी फौज में नौकरी करते बीती थी और वह बुजुर्गों द्वारा संचित की हुई जमा पूंजी और अड़तालीस एकड़ जमीन भरसक बचाये हुए था, निहायत ही सज्जन और जुबान का पक्का व्यक्ति था। आजकल नवाबपुर खरखौदा का सरपंच था। सभी जातियों के लोग उसकी इज्जत करते। वह सबसे प्यार, खुलूस और अपनेपन से पेश आता। पूरी उम्मीद थी कि वह अगला इलेक्शन भी जीत जाए। लेकिन ऐसे आदमी के भी शत्रु होते ही हैं। चार पांच आर टी आई एक्टिविस्ट, पत्रकार नुमा व्यक्ति उसके भी दुश्मन थे। लेकिन वह उनसे भी कोई खुंदक न रखता था।

गहलड़ सिंह जिस बैंक में गार्ड था उस बैंक के सामने एक फोटो कॉपी, स्टेशनरी और लेमिनेशन की डबल मंजिल बड़ी दुकान थी जिस पर शर्मा टाइप एंड फोटोस्टेट का बोर्ड लगा था जिसका मालिक सूबेदार मुकेश सिंह था, जिसकी जाति बाल्मीकि थी यही उसका इकलौता कसूर था जो शर्मा टाइप एंड फोटोस्टेट का बोर्ड लगाने से गंभीर हो गया था। हुआ यूं था कि जब मुकेश सिंह फौज से रिटायर होकर आया तो उसने यह दुकान खरीद ली थी। दुकान का भूतपूर्व मालिक कोई ब्राह्मण था इसलिए दुकान का नाम शर्मा टाइप एंड फोटोस्टेट था। अंजान आदमी उसे शर्मा जी और जानकार आदमी सूबेदार कहते थे। लेकिन गहलड़ सिंह जो हकीकत जानता था उसे इस बात से बड़ी तकलीफ थी कि एक बाल्मीकि उसके बराबर के पद से रिटायर हुआ था और शर्मा का बोर्ड लगाकर जाति छुपाये बैठा है।

वह अक्सर कहता कि जो जिस जाति में पैदा हुआ है उसे उस जाति को छुपाना नहीं चाहिए। ऐसा कहते वक्त उसका चेहरा नफरत से टेढ़ा मेढा हो जाता और उसकी बड़ी बड़ी मूंछे ऊपर नीचे पेंडुलम की तरह हरकत करने लगती।

बैंक का मैनेजर एक पंजाबी खत्री था जो अभी अभी ट्रांसफर होकर आया था। सरनेम चौधरी लिखता था क्यों लिखता था यह उसे भी मालूम नहीं था। उसके बाप-दादा लिखते आए थे इसलिए उसने भी लिखा था। वह वैसा ही था जैसे बैंक मैनेजर अक्सर होते हैं। थोड़ा बढ़ा हुआ पेट, थोड़ी निकली हुई गंजी चाँद! थोड़ा एटीट्यूड वाला व्यवहार। थोड़ा मिलनसार होने का अभिनय, थोड़ा सनकीपन! जो गरीब और मजबूर के सामने मुखर हो जाता और प्रभावशाली, सम्पन्न ग्राहक के सामने सनकीपन खोल में दुबक जाता, विनयशील और मिलनसार व्यक्तित्व सामने आ जाता।

ये सारे चरित्र मतलब राजबीर थानेदार, राव धनपत, गणेश मुदगल सरपंच, गहलड़ सिंह ठाकुर, शर्मा टाइप एंड फोटोस्टेट का मालिक सूबेदार मुकेश सिंह और बैंक मैनेजर चौधरी साहब सब कहीं न कहीं किसी अदृश्य डोर से एक दूसरे से बंधे हुए थे। इस डोर का आखिरी सिरा विधाता ने पकड़ रखा था जो अपनी मर्जी से इंसानों को कठपुतलियों सा नचाता था और इंसान पाँच विकारों काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार से बंधे स्वयं को ही अपनी जिंदगी का निर्धारक और नियंता समझकर निर्रथक दौड़ में लगे थे। आगे बढ़ने की दौड़, ज्यादा से ज्यादा धन सर्जन की होड़। और जिन्हें समाज को रास्ता दिखाने का काम करना था वे साधु संत धर्म ग्रंथों का स्वाध्याय करने और समाज को मार्ग दिखाने के स्थान पर अपने शिष्यों की संख्या बढ़ाने और मठाधीश बनने की अलग ही होड़ में लगे हुए थे। मतलब यह कि संसार त्याग के भी वे सांसारिक से ज्यादा सांसारिक थे।

अब संसार है तो संवाद की कटु स्थितियों में आदमी का न चाहते हुए भी पड़ जाना स्वाभाविक है। उस दिन भी ऐसा ही हुआ था। महीने का आखिरी दिन मैनेजर चौधरी रोज के मुकाबले ज्यादा खुश था। उसकी बूढ़ी होती पत्नी जिसकी वैवाहिक संबंध और उसके आधार संभोग में रुचि उतार पर थी, ने कल रात उसकी इच्छा के आगे समर्पण कर दिया था। खाली समर्पण ही नहीं बल्कि सहयोग और सानिध्य भी प्रदान किया था। चौधरी सुबह से गुनगुना रहा था। गुनगुनाते हूए खुण्डे ब्लेड से शेव किये जा रहा था। सामान सब खत्म हुआ रखा था। पत्नी कई बार कह चुकी थी कि राशन का सामान लाना है लेकिन उसे याद ही नहीं रहता था। खुण्डे ब्लेड की वजह से कई खूंट छूट गए थे। जो उसे नजर कमजोर के कारण दिखाई नहीं दिए। उसकी निगाह घड़ी पर पड़ी वह अभी नहाया भी न था और नौ बज गए थे। नहाकर वह जल्दी जल्दी बाहर निकला। पत्नी ने टोका भी कि दाढ़ी ढंग से नहीं बनी है लेकिन उसने ध्यान न दिया। दो ग्रास इधर, दो ग्रास उधर पेट में डाल वह बैंक की तरफ भागा।

बैंक में घुसा तो सीट पर दुनिया भर का काम फैला पड़ा था। दो बाबू छुट्टी पर थे और एक लेडी क्लर्क ने लेट आने को बोला था। बैंक में भीड़ देखकर उसका जी बैठ गया।

अपनी कुर्सी पर बैठा। एक गिलास पानी पिया और मेल चेक करने लगा। एक स्टेटमेंट अर्जेंट भेजनी थी। उसे डाउनलोड करना शुरू किया। नेट बहुत स्लो था। उसने बी एस एन एल, बैंक, इंडिया को गाली दी। सामने चाय वाला जाता दिखा, बैठे बैठे उसे आवाज दी, "एक चाय तेज पत्ती, कम चीनी, दूध बिल्कुल थोड़ा सा! जरा जल्दी! ! "

तभी उसके केबिन में गणेश मुदगल सरपंच ने प्रवेश किया, "नमस्ते चौधरी साहब! के हाल सैं आपके! "

"ओह! आइए सरपंच साहब! बड़े दिन में दर्शन दिए। कभी कभी संभाल लिया करो हम गरीबों को भी! "चौधरी हँसते हुए बोला।

"अजी गरीब तो हम किसान हैं। कभी अतिवृष्टि! कभी अनावृष्टि! ! कभी तेज धूप कभी पाला। आप मुलाजिम लोगों को तो बंधी तनख्वाह मिलती है। बाढ़ आये चाहे सूखा पड़े आप को तो तनख्वाह मिलनी ही मिलनी है।" सरपंच साहब हँसते हुए बोले।

"चलो आपकी बात सही। आप भी गरीब, हम भी गरीब! " चौधरी साहब हथियार डालते हुए बोले। ऐसा नहीं था उनके पास तर्क नहीं थे। लेकिन स्टेटमेंट डाउनलोड हो चुकी थी और उनका ध्यान इसे पढ़ने में था।

"एक उठे मंडी में आत्मा राम थो, सरपंच रहयोड़ो थो। गाम में ते जद बी कोई मंडी थाना में पोंच जातो, थाना का मुंशी और होलदार आत्माराम की कपड़ा की दुकान पे पोच जातो और आत्मा ने बता के आतो के थारे गाम के अक फलाने फलाने ने दरख्वास्त देइ से फलाने के ख़िलाफ़ "सरपंच साहब चाय की चुस्की लेने के लिए रुके और मैनजर को साहब की झाड़ का डर लगा। स्टेटमेंट आज ही भेजनी थी और सरपंच साहब जाने कब तक किस्से को जारी रखें।

"आत्मा का छोरो थो हरी! बाप ते कति उलट! वो समाज के कामा में पैसा खान लाग गयो! आत्मा ने दुकान पे बैठनों छोड़ दियो थो। आपने घरां पड्यो रहतो। कोई बुलावण ने आतो तो एक्के जबाब देतो, "भाई! क्यों बुढापा में मेरी मट्टी खराब करवावो! छोरा ने मेरी पगड़ी उछाले राखी सै। मैं पंचायत में बैठण लायक कोन्या छोड़ राख्या मेरा बालकां ने। बड़ी मेहनत ते कमाई इज्जत तै मिट्टी मिल गई। इब कसाले कर कर के बनाई प्रॉपर्टी भी जावेगी। करयोडे कर्म आगे आवेंगे। फौजदारी के मुकदमा लड़न आले वकील अर बिचोलिये फौजदारी का शिकार होके मर्या करें सै!"

बीच में से एक फौन आ गया तो मैं फोन सुनने के बहाने बाहर आ गया। दस मिनट बाद लौटा तो सरपंच साहब जा चुके थे।

सरपंच साहब दिल के बड़े अच्छे आदमी थे। कर्मचारियों के हितैषी थे। बस एक ही कमी थी उनमें, बातूनी थे। हालांकि उनके किस्से रोचक होते थे। मानव मन की परतें खोलते थे लेकिन नौकरी इतना समय नहीं देती थी कि उनकी किस्सागोई का लुत्फ़ तल्लीन होकर लिया जा सके।

अक्सर उनका किसी न किसी व्यक्ति के काम के सिलसिले में आना होता ही रहता था। कभी वे बाजरा की घी घालि रोटी गरमा गरम सिंकवा कर लाते। कभी वे खीर चूरमा बनवा लाते। फिर इतने इसरार से खिलवाते कि मना करते नहीं होता था। कभी कभी बड़ी खीझ होती या परेशानी होती लेकिन संकोच के मारे मैं उनसे कुछ कह नहीं पाता था यह सोचकर कि कहीं उनको बुरा न लगे। कई बार संकेतों में मैने उनको समझाने की कोशिश भी की थी लेकिन सब निष्फल! शायद सरपंच साहब इशारों की जबान समझते ही नहीं थे या जान बूझ कर इग्नोर करते थे।

उधर गहलड़ सिंह गॉर्ड बैंक के बाहर गेट पर खड़ा खड़ा किसी से बातें कर रहा था। सामने से शर्मा टाइप एंड फोटोस्टेट वाले मुकेश सिंह ने आवाज लगाई, "गहलड़ सिंह यह आपके बैंक का फोटो कॉपी का बिल ले जाओ। "गहलड़ सिंह पहले से ही मुकेश सिंह से खार खाता था। फिर किसी जान पहचान वाले के सामने इस तरह से पुकारा जाना उसे नागवार गुजरा, "यह तेरा बोलने का तरीका है क्या। मैं तेरा रनर न लग रहा। हरामजादा, दो पैसे का आदमी। मेरे को नाम से बुलाता है। "

"मैंने क्या कह दिया तेरे को। तेरे बैंक का बिल है, तू लेके चला जाएगा तो क्या हो जाएगा। इतना ही बड़ा आदमी है तो गार्ड की नौकरी क्यों कर रहा है। "मुकेश भी तल्ख लहजे में बोला।

"मैं तेरा रनर नहीं हूँ। गार्ड की नौकरी कर रहा हूँ अपनी मर्जी से। तेरी तरह झूठ बोलकर अपने नाम के आगे शर्मा नहीं लगाता। जात का ठाकुर हूँ इसलिए राजपूत लगाता हूँ। "

"तूने मुझे जातिसूचक गाली दी है। अभी तेरे मैनेजर से शिकायत लगाता हूँ। "यह कहकर वह तेजी से बैंक का गेट पार करने लगा।

यह देख गुस्से से गहलड़ सिंह ने उसे रोकने की कोशिश की। मुकेश ने उसे धक्का दिया, गहलड़ गिरते गिरते बचा। गहलड़ का राजपूती खून उबाल मारने लगा। "ठहर जा भो.. के। तेरे को मैं सुधारता हूँ। "कहकर उस पर झपटा। पहले तो दो तीन थप्पड़ मारे। फिर बंदूक का बट उसके सिर में दे मारा।"

दोनों गुथम गुथा हो गए। बड़ी मुश्किल से लोगों ने दोनों को छुड़ाया। जब तक मैनेजर केबिन से बाहर निकलता और पता करता माजरा क्या है। दोनों की छुटा छूटाई हो चुकी थी। अब वे अपने स्थान पर खड़े खड़े गालियां दे रहे थे।

दोनों मैनेजर को देखकर और ज्यादा जोश में आ गए।

"मैनेजर साहब आपके इस गार्ड गहलड़ ने मुझे धक्का दिया, दो थप्पड़ मारे! बट से हमला किया और जातिसूचक गालियाँ दी।

"पहले अपनी बता तूने क्या किया। चौधरी साहब! ये फ़ोटो कॉपी करता है बैंक की। मैं तो इससे फोटोकॉपी करवाता नहीं। मैं यहाँ गार्ड की नौकरी करता हूँ। मेरी ड्यूटी गेट पर गन लेकर खड़ा होने की है। मैं यहाँ चपड़ासी नहीं। इसका रनर नहीं। ये फौज में सूबेदार जरूर था लेकिन मेरा जूनियर था। इसका मेरा नाम लेकर बोलने का क्या मतलब बनता है कि "बैंक का फोटोकॉपी का बिल ले जा! "

"बात तो आपकी सही है ठाकुर साहब! लेकिन सामने वाला तमीज़ से बात न करे तो हम सब्र कर लें। "मैनेजर ने उसे समझाया तो गहलड़ कुछ ठंडा पड़ा।

अब बारी मुकेश की थी

"मैनेजर साहब आप न्याय करो। आप अपने कर्मचारी का पक्ष मत लो। मैं तो इसकी शिकायत लेकर आपके पास ही रहा था इसने मेरे थप्पड़ मारे। बट से हमला किया। जातिसूचक गाली दी। "

"यह तो गलत बात है ठाकुर साहब। मुकेश जी हमारे पड़ोसी और ग्राहक दोनों हैं। लेकिन मुकेश जी आपका ठाकुर साहब को इस तरह पुकारना गलत तो है ही। ये आपसे उम्र, पद और जाति में भी बड़े हैं। फिर ये यहाँ गार्ड हैं चपड़ासी नहीं। "मैनेजर ने मामला संभालने की कोशिश की।

"गार्ड चपड़ासी ही होता है। नहीं भी होता तब भी गार्ड बैंकों में पानी पिलाने, किताब उठाकर देने, बाहर का छोटा मोटा काम करते रहते हैं। लेकिन यह ठाकुर है न। इसकी अकड़ नहीं गई। रस्सी जल गई मगर ऐंठ नहीं गई। "

मुकेश के इस तरह बोलने से गहलड़ काफी गुस्से में आ गया।

आगे बढ़ते हुए बोला, "तू ऐसे नहीं मानेगा। "

मैनेजर ने बड़ी मुश्किल से उसे रोका।

"लोग तो गू खाते होंगे। मैं नहीं खाता। मैं सूबेदार गहलड़ सिंह राजपूत का छोरा नहीं जो तुझे न सुधार दिया।

यह कहता हुआ वह गुस्से से वहाँ से चल दिया।

मैनेजर की जान में जान आई। उसने मुकेश सिंह से कहा,

"बिल दे भाई। मेरा बहुत काम पेंडिंग पड़ा है। तू दुकानदार आदमी है। काहे को ऐसे झगड़े में पड़ता है। इससे तेरी दुकानदारी खराब होगी। "

"आप गलत बात को बढ़ावा दे रहे हो मैनेजर साहब। इस आदमी ने मुझे मारा है, मुझे जातिसूचक गालियाँ दी हैं। बैंक में जाने से रोका है। आपने इससे कुछ नहीं कहा। "मुकेश दुःखी होते हुए बोला।

मैनेजर ने उसकी बात पर कोई कान नहीं दिया। उसके हाथ से बिल लेकर अंदर चला गया।

मैनेजर चौधरी ने समझा कि इतनी ही घटना थी और यह बात यहीं खत्म हो जाएगी।

लेकिन बात यहीं खत्म न हुई। सूबेदार मुकेश सिंह चुप रहकर बैठने वालों में से नहीं था।

उसे पता था क्या करना है उसने एग्जेक्टली वही किया। उसने एक दो गवाह तैयार किये और थाने जाकर एस सी एस टी एट्रोसिटी एक्ट और आई पी सी की विभिन्न धाराओं में गहलड़ सिंह गार्ड के खिलाफ और उसे सरंक्षण और शह देने के लिए मैनेजर चौधरी के खिलाफ एफ आई आर दर्ज करवा दी। दुकान पर वापिस लौटकर उसने ऑनलाइन सी एम विंडो पर मैनेजर और गार्ड के खिलाफ शिकायत दर्ज करवा दी। महीने की आखिरी तारीख निकल गई। चौधरी को फिर भी बैंक में फुरसत न लगी। कभी पेंशनर की भीड़, कभी स्कूल के बच्चों की फीस व अन्य काम। उपर से रिकवरी और नए लोन का दवाब। इतने कम करते करते चौधरी इस घटना के बारे में बिल्कुल भूल गया।

उस दिन दस तारीख थी। जब पुलिस थाने से फोन आया।

"मैनेजर साहब! मैं इंस्पेक्टर राजबीर बोल रहा हूँ। आपके बैंक के गार्ड के खिलाफ मारपीट और गाली गलौच का मुकद्दमा दर्ज हुआ है। इस केस का मैं इंवेस्टिगेटिंग ऑफिसर नियुक्त हुआ हूँ।

आप अपने गार्ड को थाने भेजो। कुछ पूछताछ करनी है। "

"जी जरूर! "मैनेजर का जवाब था।

"और हाँ मेरा एक सवाल आपसे भी है। पिछले महीने तीस तारीख को आपके गार्ड का किसी से बहस झगड़ा वगैरह हुआ था। "इंस्पेक्टर ने पूछा था।

"जी हाँ! हुआ तो था। "चौधरी ने संभल कर बोलते हुए कहा।

"तो आपने सरकारी कर्मचारी के कार्य में बाधा डालने की रिपोर्ट थाने में क्यों नहीं की।"

इंस्पेक्टर ने दूसरा सवाल किया।

"छोटा मोटा झगड़ा था साहब! बैंक वालों का रोज ऐसे लोगों से वास्ता पड़ता है। काम इतना है, किस किस की शिकायत करते फिरें। "मैनेजर ने मजबूरी व्यक्त की।

"क्या अब आप ऐसी कोई रिपोर्ट दर्ज करवाना चाहते हैं। "इंस्पेक्टर ने फिर पूछा था।

"रीजनल मैनेजर से पूछना पड़ेगा। "मैनेजर का जवाब था।

"पूछ लीजिए। आप मुलाजिम आदमी हैं। इसलिए आपको पूरा पूरा मौका दे रहा हूँ। फिर मत कहना कि मौका नहीं दिया था। "इंस्पेक्टर ने हँसते हुए कहा।

"ठीक है इंस्पेक्टर साहब! आपका मोबाइल नम्बर दीजिए। पूछकर बताता हूँ। "

इंस्पेक्टर ने उसे अपना नम्बर दिया। मैनेजर चौधरी ने नम्बर लिखकर रीजनल मैनेजर को फोन किया।

रीजनल मैनेजर का जवाब था। "आप को लगता है कि रिपोर्ट दर्ज करवाने से कुछ फायदा होगा तो करवा देना। और हाँ लोन रिकवरी पर ध्यान दो। आपकी ब्रांच का एन पी ए घटने के बजाय बढ़ रहा है। "

"जी सर! "

फिर उसने इंस्पेक्टर को फोन मिलाया और बोला, "फिलहाल इजाजत नहीं मिली है। बाद में देखते हैं। गार्ड को भेज दूंगा। "

"ठीक है, "कहकर इंस्पेक्टर ने फोन रख दिया।

गार्ड को बुलाकर बोल दिया गया। गार्ड नवाबपुर गाँव का ही रहने वाला था। लोकल आदमी था उसके संपर्क थे। इसलिए थाने जाकर अपना बयान लिखवा आया। बयान में उसने साफ इंकार किया कि उसने मुकेश सिंह को कोई जस्टिसूचक गाली दी है। या पीटा है। उल्टा वही उसे धक्का देकर अंदर घुस रहा था। बैंक में जाने से पहले वह उसे तलाशी देने को कह रहा था जिस पर नाराज होकर मुकेश ने उसे गाली दी थी। और धक्का दिया था। आप मैनेजर साहब से इस बारे में पूछ सकते हैं। मैंने उन्हें शिकायत भी की थी। "

गहलड़ सिंह का जवाब लेकर राजबीर ने शिकायत दफ़्तर दाखिल कर दी।

नवाबपुर गाँव , जिसका सरपंच गणेश मुदगल था, में अहीर, जाट, ठाकुर, ब्राह्मण और दलित सब जातियों के लोग रहते थे। सबसे अधिक घर ठाकुरों के थे। लेकिन उनके पास जमीन सबसे कम थी। उनकी जमीन धीरे धीरे अहीरों ने खरीद ली थी। दो पीढ़ी पहले जो

ठाकुर गाँव के बड़े जमीदार कहलाते थे उनकी संताने बी पी एल के कार्ड बनवाती घूम रही थी। पशुओं का एक टोकरा हरा चारा जुटाने के लिए उनके घर की औरतें अहीरों के खेत से घास खोद कर लाती थी। बुजुर्गों की निशानियाँ बड़ी बड़ी हवेलियाँ अभी भी बची थी लेकिन भाई भाई के झगडों ने उनमें दीवारें खींच दी थी। इसलिए हर एक के हिस्से में हवेली का छोटा हिस्सा आया था। इसलिए जिनको सरकारी सिविल या फौज की नौकरी मिल गई थी वे लोग ही गाँव में नए मकान बना पाए थे। इन्हीं लोगों में गहलड़ सिंह भी था। दूसरे नंबर पर अहीरों के घर थे। ये लोग मेहनत से खेती करते। इनके बच्चे पढ़ाई में आगे निकल रहे थे। अच्छे नंबरों और उस पर ओ बी सी के रिज़र्वेशन की वजह से अच्छे कॉलेजों में उनके एडमिशन हो रहे थे। अच्छी अच्छी नौकरियों में लग रहे थे। उनके खेत साफ सुथरे लहलहाती फ़सलों से भरपूर थे। उनके घर सुंदर सुंदर और नए बने थे।

उनकी खुशहाली देख के बाकी जातियों के सीने पर साँप लौटता था। लेकिन कर कुछ नहीं सकते थे क्योंकि अहीरों में एकता बहुत थी। उनकी जाति के नेता भी उनकी एक आवाज पर इकट्ठे होते थे। वे भी अपने नेता को एकमुठ होकर सपोर्ट और वोट करते थे। लेकिन इतना करने के बावजूद वे इतने वर्षों से किसी अहीर को सरपंच नहीं बना पाए थे क्योंकि चुनाव के समय दलित, ठाकुर और ब्राह्मण मिलकर वोट करते थे। फिर गणेश मुदगल की छवि भी अच्छी थी। उसके चरित्र में दोष निकालना भी मुश्किल था।

गहलड़ सिंह ने थाने में बयान तो दर्ज करा दिया था लेकिन उसे अंदेशा था कि बात आगे बढ़ेगी। इसलिए वह सरपंच गणेश मुदगल से मिलने आया था। गणेश मुदगल इस घमंडी और बददिमाग आदमी को पसंद तो नहीं करता था लेकिन उसका वोट बैंक था इसलिए अपनी नापसंदगी जाहिर भी न करता था।

गणेश ने उसे सूबेदार साहब कहकर सम्मान दिया तो उसका सीना गर्व से चौड़ा हो गया।

"दादा! काम ही ऐसा आन पड़ा है कि तुम्हें तकलीफ दे रहा हूँ। वो छोटी जात का आदमी मेरा अपमान करता है। मुझसे अपशब्द बोलता है। मैं तो अपनी ड्यूटी करता हूँ। न उसकी दुकान पर जाता, न ही उससे वास्ता रखता हूँ। उस दिन उसने ही पहले छेड़ करी थी। नहीं तो मेरा कोई मतलब नहीं था कुछ कहने का। फिर मैंने उससे कुछ कहा नहीं। वह बेमतलब ही झूठी शिकायत कर आया। "

गणेश मुदगल ने उसे दिलासा दिया और आश्वासन दिया कि वह इस मामले में राजबीर इंस्पेक्टर से बात करेगा। फिर देखते हैं क्या होता हैं। उसने गहलड़ को गुस्से पर नियंत्रण करने की सलाह दी।

एक दो दिन बाद मैनेजर चौधरी को सी एम विंडो की शिकायत मिली। उसने उसका भरसक संयत जवाब बनाकर भेज दिया। लेकिन रीजनल ऑफिस और एल डी एम ने उसका जवाब वापिस भिजवा इस नोट के साथ कि या तो कस्टमर का सैटिस्फैक्शन लेटर भेजो। या दो एमिनेंट पर्सन के साइन करवा करके भेजो। मुकेश सिंह ने साइन करने से साफ इंकार कर दिया था। एमिनेंट पर्सन ने भी बैंक के खिलाफ रिपोर्ट लिख दी क्योंकि एक तो वह मुकेश सिंह को व्यक्तिगत रूप से जानता था। दूसरा वह दलित जाति से ही संबंध रखता था।

अब मैनेजर चौधरी के लिए मुसीबत खड़ी हो गई।

चौधरी को सरपंच गणेश मुदगल की याद आई। उसने उनका नम्बर ढूंढ कर फोन किया, उन्होंने तुरंत फोन उठाया।

चौधरी ने सारा किस्सा बयान किया। वे बोले, "कोई बात नहीं, मैनेजर साहब! देखते हैं, कल परसों मैं आपके पास आऊँगा। फिर बात करते हैं। "

लेकिन सरपंच न आया।

दो दिन इंतजार करने के बाद चौधरी खुद ही नवाबपुर पहुंचा। सरपंच साहब कुछ लोगों के साथ बैठे हुए थे। राजबीर इंस्पेक्टर भी वहीं था। सरपंच साहब बड़े प्यार से मिले। चाय पानी हो चुकने तक इधर उधर की बातें चलती रही। फिर चौधरी ने उन्हें सी एम विंडो की शिकायत की बात याद दिलाई।

सरपंच साहब बोले, "मैनेजर साहब! बुरा मत मानना, आप शरीफ आदमी हो। यह गहलड़ बैंक गार्ड के लिए ठीक आदमी नहीं है। निहायत ही बदतमीज और घमंडी आदमी है। इस मुसीबत से तो जैसे तैसे हम आपको निकालेंगे। लेकिन यह आदमी रोज नई मुसीबत खड़ी करता रहेगा। हालाँकि हमारा वोटर है, दिलोजान से सपोर्ट करता है। लेकिन सच बात तो कहनी पड़ेगी। यह आदमी आपकी और आपके बैंक की छवि खराब कर रहा है। "

सरपंच साहब की बात सुनकर चौधरी खामोश बैठा रहा। उसे भी आभास था कि गार्ड की भी ग़लती थी।

वहाँ राव धनपत भी बैठा था। वह भी गहलड़ से खार खाता था।

"ठीक कहो सो! सरपंच साहब। गहलड़ बड़ी मैं में रहता है। रस्सी जल गई पर ऐंठ नहीं गई। इन ठाकुरों का व्यवहार तो पहले से ही खराब था। अहीर जमीन जायदाद, पैसे धेले और सरकारी नौकरी में इनसे बहुत आगे हैं। फिर भी ये ठाकुर हमें अपनी प्रजा समझते हैं। होते होंगे हमारे बुजुर्ग इनके हाली-माली। इनकी औरतें एक टोकरा न्यार के लिए हमारे खेतों में घास खोदती फिर रही हैं। फिर भी ये लोग खुद को राजा समझते हैं। "

अब राजबीर थानेदार की बारी थी।

"गलती मैनेजर साहब की भी है। मैंने इनको सरकारी काम मे बाधा डालने का मुकदमा दर्ज करवाने की सलाह दी थी। जो इन्होंने नहीं मानी। बगैर शिकायत के हम उस मुकेश सिंह को अंदर नहीं कर सकते। उसकी दी शिकायत तो मैंने गहलड़ से जवाब लिखवा कर फ़ाइल फिलहाल बंद कर दी है। लेकिन मामला दबेगा नहीं। वो मुकेश सिंह आकर मुझे ही क़ानून पढ़ा गया है। "

चौधरी ने सफाई दी, "मुझे हर काम ऊपर बैठे अफसरों से पूछ कर करना होता है। मैं अपने आप कुछ नहीं कर सकता। "

"मैनेजर साहब की बात सही है। इनकी घर की दुकान थोड़े है। "सरपंच ने चौधरी का समर्थन किया।

"जाट मुख्यमंत्री होता तो मैं जबानी शिकायत पर ही इस मुकेश सिंह को उठा लेता। लेकिन पंजाबी सी एम है, हर चीज सोचकर करनी पड़ती है। "राजबीर का अंदर का दर्द उभर आया था।

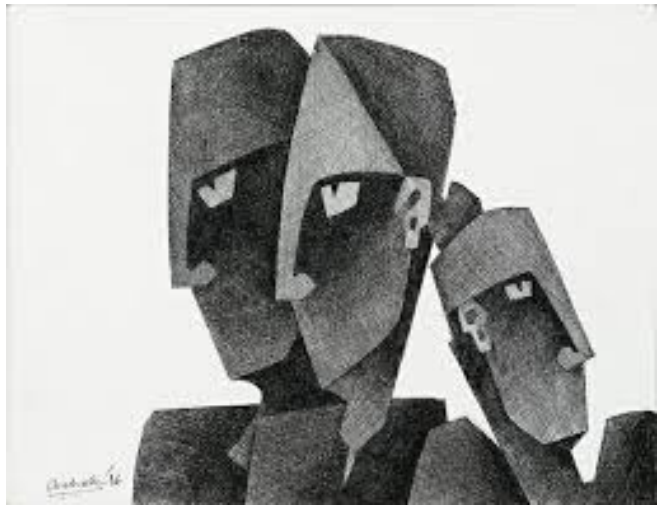

"अब थानेदार साहब! बात को जातिवाद में मत उलझाओ। दिल पर हाथ रखकर बताओ। ऊपर से कोई मंत्री या अफसर आपको गलत काम के लिए कहता है। हमारी सरकार ने अफसर को जितनी इंडिपेंडेंस दी है। किसी ने पहले नहीं दी। "सरपंच हँसते हुए कहने लगा।

"वो बात सही है, लेकिन इस राज में छोटी जात वालों का मन बहुत बढ़ गया है। अफसर से तू तड़ाक में बात करने लगे हैं। "राजबीर इंस्पेक्टर का तर्क था।

"वो तो डेमोक्रेसी है भई। सबको अपनी बात कहने का हक़ है। अब मुझे देखो, हर महीने तीन चार शिकायत और आर टी आई तो मेरे खिलाफ ही लगी रहती हैं। जबकि पल्ले से पैसा लगाकर विकास कर रहा हूँ।"

सरपंच ने अपनी दिक्कत बताई

"आप तो लोकल आदमी हो। आपके संपर्क हैं। आप मिलजुल कर मामला निपटा सकते हो। हम शांति से , ईमानदारी से नौकरी करने वाले क्या करें। "चौधरी का दर्द उभर आया था।

"ठीक है, मैनेजर साहब! हम आपके साथ हैं। जहाँ तक बन पड़ेगा आपकी पूरी मदद करेंगे। मैं एमिनेंट पर्सन के पास आपको ले चलूंगा। आप शांति से बैंक जाओ। शाम को बैंक बंद होने के बाद मुझे फोन करना। मैं उनसे टाइम ले लूंगा। बल्कि मैं आपको फोन करूंगा।

चौधरी यह सुनकर शांति से लौट आया। शाम होने तक सरपंच साहब का फोन न आया।

बैंक बंद होने के बाद उसने खुद फोन किया। सरपंच साहब बोले, "पुल के पास वाले मोहल्ले में एमिनेंट पर्सन का घर है। मुझे मकान नम्बर तो नहीं मालूम। आप पुल के पास पहुंचे। मैं आ रहा हूँ। "

चौधरी रिक्शा पकड़कर वहाँ तक पहुंचा। दस मिनट इंतजार करने के बाद सरपंच साहब स्कार्पियो में आते दिखाई दिए।

सरपंच की स्कार्पियो में सवार होकर वे दोनों एमिनेंट पर्सन के घर पहुंचे।

"ज्यादा बात मैं करूंगा। जब आपसे कुछ पूछा जाए, तभी आप बोलना। "सरपंच ने उसे समझाया।

"जी, ठीक है! " चौधरी ने जवाब दिया।

एमिनेंट पर्सन सरपंच की उम्र का ही व्यक्ति था।

उसका नाम धर्मवीर भारती था। नाम से अंदाजा नहीं लगता था कि वह किस जाति का था। वह सरपंच से बगलगीर होकर मिला। दोनों काफी देर पुरानी बातों पर हँसते रहे। सरपंच की एमिनेंट पर्सन से घनिष्ठता देखकर चौधरी की जान में जान आई।

इधर उधर की बातें आधा घंटा और चली। चाय पी गई और हुक्का गुड़गुड़ाया गया।

इसके बाद सरपंच साहब मुद्दे की बात पर आए।

"ये अपने मैनेजर साहब! निहायत ही शरीफ़ और सज्जन। मिलनसार आदमी हैं। अभी थोड़े दिन ही हुए हैं इन्हें आये लेकिन सब ग्राहक लोग, मिलने जुलने वाले इनकी तारीफ करते हैं। ये एक मुसीबत में फंस गए हैं। जिसमे इनकी कोई गलती नहीं हैं। "यह कहकर सरपंच ने किस्सा बयान किया।

"हाँ! मुकेश आया था मेरे पास। मेरा रिश्तेदारी का कनेक्शन भी है उसके साथ। अच्छा खा कमा रहा है। इलेक्शन में भी मदद करता है। मैंने उससे कहा था, बल्कि समझाया था, देख मुकेश मैं राजनैतिक आदमी हूँ। हमारा काम नौकरी देने का है, नौकरी छीनने का नहीं है। हम पाँच साल के लिए आते हैं। मुलाजिम परमानेंट रहता है। गद्दी की हनक में और अपनी

पार्टी के राज के गरूर में हम कोई ऐसा काम न करें कि जब हमारा राज न रहे तो कोई अफसर हमें पहचाने ही न, बैठने को ही न पूछे। कर्मचारी को हमसे कभी कभार काम पड़ना है। हमारा दफ़्तर में रोज का आना जाना है। लेकिन मैनेजर साहब इस मामले में आपकी भी थोड़ी गलती है। आपको अपने गनमैन को डांटना चाहिए था। मुकेश ठीक आदमी है, इतने से ही संतुष्ट हो जाता। मामला आगे नहीं बढ़ता। "

भारती जी की बात सुनकर चौधरी को अहसास हुआ कि उसे मामले को संभालने के लिए कुछ नहीं किया।

"काम का दवाब इतना है सर! कि जरूरी काम रह जाते हैं। मेरा मन था कि शाम को मुकेश से बात करूंगा। लेकिन ध्यान ही न रहा। अब बात इतनी बढ़ गई है कि मुझे लगा कि बातचीत से कोई हल नहीं निकलेगा।" चौधरी ने अपना पक्ष रखा।

"मुकेश अपना आदमी है। मैं उसे आपसे बात करने को कहूँगा। लेकिन मेरी एक रिक्वेस्ट है। गहलड़ गलत आदमी है। आप उसको संरक्षण मत दो। यह आदमी आपको एक न एक दिन अपने साथ ले डूबेगा। "

भारती जी ने कहा तो सरपंच ने भी समर्थन किया, "मैंने भी मैनेजर साहब से यही कहा था।'

"मैं आपको एक कहानी सुनाता हूं। एक ऊंट और गीदड़ की यारी हो गई। इतने घनिष्ठ मित्र हो गए कि गीदड़ ऊंट की सवारी करता। बाकी गीदड़ उसे ईर्ष्या से देखते। एक दिन दोनों मित्र नदी किनारे जा रहे थे।

गीदड़ बोला, "मित्र! कितना अच्छा होता कि एक नाव होती। हम उसमें बैठके नदी में विहार करते। "

"इसमें क्या बड़ी बात है। मेरे होते हुए तुम्हें नाव की क्या जरूरत है। चलो मैं तुम्हें नदी की सैर करवा देता हूँ। "इतना कहकर ऊँट नदी में घुस गया। गीदड़ ऊँट की गर्दन पकड़ नदी की सैर का आनंद ले रहा था। मझधार में पहुंचकर ऊँट बोला, "मित्र, नदी के शीतल जल में मेरा नहाने का मन कर रहा। जी कर रहा लोट लोट कर नहाऊं। मुझे लुटलूटी आ रही है। "

गीदड़ ने उसे लाख समझाया। लेकिन ऊँट भी आदत से मजबूर था। उसे लुटलूटी आ गई तो आ गई। ऊँट ने पानी में लोट लगाई तो गीदड़ डूबके मर गया।"

"तुम्हारी किस्से सुनाने की आदत नहीं गई" सरपंच हँसते हुए बोला।

"ये जो दृष्टांत, जो किस्से कहानियां, पंचतंत्र या किस्सा हजार रातें में दिए रहते हैं। या जबानी हम बुजुर्गों के मुँह से सुनते आए हैं, ये खाली टाइम पास या हँसने हँसाने के लिए ही नहीं है, बल्कि इनमें जीवन का निचोड़ है। नीति-व्यहवार के उपदेश हैं इनमें। "भारती जी गंभीर होते हुए बोले।

दो चार बातें और हुई। इसके पश्चात उन्होंने विदा ली। अगले दिन दोपहर बाद मुकेश सिंह चौधरी साहब के पास आया। चौधरी साहब ने ए टी आर लिखकर तैयार कर रखी थी। उसके सामने रखकर बोले, "देख लो। कुछ बढ़ाना घटाना हो तो बोल दो। मैं लिख दूंगा। "

मुकेश सिंह पढ़ने लगा, "चूंकि घटना बैंक के बाहर घटित हुई थी इसलिए बैंक मैनेजर को इस बारे में कोई जानकारी नहीं थी। अब शिकायत कर्ता से बात करने के बाद और गार्ड गहलड़ सिंह से पूछताछ करने के बाद अधोहस्ताक्षरी इस नतीजे पर पहुंचा है कि गार्ड गहलड़ सिंह ने बगैर उकसावे के गाली गलौज किया और मारपीट की। इसमें मुकेश सिंह का जरा भी कुसूर नहीं है। शाखा प्रबंधक अपने उच्चाधिकारियों को इस मामले में कारवाई के लिए लिख चुके हैं। इसलिए शिकायतकर्ता मुकेश सिंह अपनी शिकायत को वापिस लेने के लिए राजी है। "

मुकेश सिंह ने पढ़कर संतुष्टि व्यक्त की और पूछा, "कहाँ हस्ताक्षर करने हैं?"

मुकेश सिंह हस्ताक्षर करके चुपचाप निकल गया।

मैनेजर ने ए टी आर लपेट कर जेब में रख ली। जाते समय भारती जी के हस्ताक्षर करवाता जाएगा।

भारती जी घर ही पर मिले। उन्होंने अपनी रिपोर्ट लिखकर हस्ताक्षर कर दिए।

चौधरी जब बहुत बहुत धन्यवाद करके कृतज्ञता व्यक्त करने लगा तो वे बोले, "कोई बात नहीं मैनेजर साहब! हाथ ही हाथ को धोता है। आज हम आपके काम आए हैं। कल आप हमारे काम आ जाना। "

उधर मुकेश सिंह एस पी के सामने पेश हुआ। उसने अपनी शिकायत के विषय में बताया। थानेदार ने कोई कारवाई नहीं कि इस बात की शिकायत की। साथ में एम एल ए की सिफारशी चिठी भी एस पी साहब को दी। एस पी साहब ने वहीं बैठे बैठे डी एस पी को फोन किया और मुल्जिम को अरेस्ट कर कोर्ट में चालान पेश करने की सलाह दी।

उस दिन शुक्रवार था। शनिवार को बैंक बंद थे। गहलड़ को राजबीर थानेदार जीप में बिठाकर ले गया। दोपहर बाद गहलड़ का फोन उसकी पत्नी के पास आया। उसने बताया, "पुलिस ने उसे गिरफ्तार कर लिया है। मैनेजर चौधरी तो फोन नहीं उठा रहा। सोमवार को कोर्ट में पेश करेंगे। तुम सरपंच से बात करो। "

यह सुनकर गहलड़ की बीवी चिंतित हो गई। उसके दोनों लड़के किसी लायक नहीं थे। अपने जेठ के लड़के को साथ लेकर वह सरपंच के घर पहुंची। सरपंच उसे देखते हुए खड़ा हो गया। उसे साइड में ले जाकर उसने सारी बात बताई। सरपंच बोला, " तुम निश्चित होकर घर जाओ। मैं देखता हूँ क्या हो सकता है। "

रात हो गई। सरपंच का कोई संदेश न आया।

साढ़े नौ बजे किसी ने उसके घर की कुंडी खड़कायी। लड़के भी घर पर न थे। उसने पूछा, "कौन है भाई! "

"मैं बिल्लू हूँ भाभी! भाई गहलड़ की खबर लेकर आया हूँ। "

यह सुनते ही उसने झट से दरवाजा खोला।

बिल्लू पुलिस का दलाल और मुखबिर था। यह बात पूरे गाँव को मालूम थी।

"भाभी तूने मेरे को न बताई। भाई गहलड़ अरेस्ट हो गया। "

बिल्लू खाट पर बैठते हुए बोला।

"मैंने सरपंच को बताया था। मुझे क्या मालूम कि तुम्हें नहीं पता। "

"सरपंच तो अपना ही आदमी है लेकिन शरीफ आदमी है। पुलिस के चक्कर से परे रहता है। पूरे गाँव को पता है कि मेरी पुलिस से जान पहचान है। "बिल्लू कहने लगा, "हैरान हूं कि तुम्हें नहीं पता। "

"भाई सच में मुझे न पता। तुम्हारे भाई ने भी कभी न बताया। अब बताओ तुम कुछ हेल्प कर सको तो। "गहलड़ की बीवी बोली।

"मैं तो किसी काम से थाने गया था। वहाँ भाई गहलड़ उदास और परेशान बैठा था। मैंने पूछा तो बोला उसको तो झूठी मारपीट की शिकायत की बिनाह पर गिरफ्तार कर लिया है। मैंने भी राजबीर थानेदार से बात करी। थानेदार बोला, मारपीट नहीं एस सी एक्ट का केस है। जमानत भी नहीं होगी। "बिल्लू बोला तो उसकी चिंता बढ़ गई।

"फिर क्या होगा, भाई! "वह घबराकर बोली।

"फिक्र न कर भाभी! अभी बिल्लू जिंदा है। मैं अपने भाई को एक हफ्ते से ज्यादा हवालात में रहने नहीं दूंगा। "बिल्लू बोला, "तू फटाफट पचास हजार रुपये निकाल। पुलिस के मुँह में डालूँगा। फिर पुलिस वही लिखेगी जो मैं बोलूंगा। वही बोलेगी जो मैं कहूँगा। "

"पचास हजार ऐसे कह रहा है जैसे पचास रुपये। तेरा भाई जितना कमाता है सब इतने लोगों का पेट भरने में खत्म हो जाता है। महीना मुश्किल से कटता है। तुम्हारे भतीजे सारा दिन आवारा घूमते हैं। जमीन कब की निपट गई। हमारे पास कहाँ पैसा रखा है। "गहलड़ की बीवी ने हाथ खड़े कर दिए तो बिल्लू बोला, "तब तो बड़ी मुश्किल है। बगैर पैसे के तो इस राज में कुछ नहीं होता। "

"तुम्हारे भाई से बात करके देखो। शायद वह किसी को जानते हों जो पैसा दे दे। "

गहलड़ की पत्नी की यह बात बिल्लू को उचित जान पड़ी। उसने कोई नम्बर मिलाया, "हवलदार साहब। मैं बिल्लू बोल रहा हूँ। जरा गहलड भाई से बात करवा दो। "

थोड़ी देर उधर शांति रही।

फिर बिल्लू बोला, "गहलड़ भाई। राम राम। तुम्हें इन लोगों ने तंग तो न किया। .....अच्छा! अच्छा! मैं बोल आया था थानेदार से, गहलड़ अपना भाई है। उसे कोई तकलीफ नहीं होनी चाहिए। खाना खा लिया! ठीक है, मैंने भाभी को तुम्हारा बेरा दे दिया था। न! न! भाभी बड़ी हिम्मतवाली औरत है। राजपूतनी है न्यू तो। लेकिन पैसा नहीं है घर में। पचास हजार से कम बात न बनेगी। "बिल्लू बोला, "ले भाभी से बात कर! "

उसने फोन दे दिया था।

गहलड़ ने पत्नी को अनुनय की कि वह किसी से पैसे का इंतजाम करे। लेकिन किससे। कौन देगा उसे पैसे।

उसने पति से तो कह दिया कि वह देखती है। लेकिन गाँव मे ऐसा कौन था जो उसे पैसे दे दे। ठाकुरों में तो पैसा किसी के पास था नहीं। अहीर उसे पैसा देंगे नहीं। हां लेकिन एक आदमी पैसा दे सकता है, राव गणपत। वह ब्याजु आदमी है।

कल सुबह उससे पूछेगी।

बिल्लू तो चला गया था। लेकिन वह रात भर बेचैनी से करवटें बदलती रही। एक पल के लिए भी उसकी आँख न लगी।

सुबह न्यार फूस करके वह राव गणपत के घर चल दी। राव गणपत बरामदे में प्राणायाम कर रहा था। यह जब से बाबा रामदेव चला है, हर कोई प्राणायाम करने लगा है।

जब तक गणपत प्राणायाम करता रहा। तब तक वह राव गणपत के बेटे की घरवाली से बातें करती रही। गाँव के नाते से वह उसे बुआ कहती थी। उसने दो तीन बार चाय के लिए पूछा। लेकिन उसने मना कर दिया। राव गणपत प्राणायाम करने के बाद मालिश करने लगा। बहू उसके पास जाकर बोली, "पिता जी! बुआ आई हैं। फूफा गहलड़ के घर से। आपसे कुछ काम है। "

"मुझसे! मुझसे क्या काम है। "

राव गणपत ने मुड़ कर देगा। वह घूँघट किये बैठी थी। वह लंगोट बाँधे बाँधे नंगे बदन उसके पास गया। कमर में उसने फेंटा सा बांध रखा था। शरीर पर सरसों का तेल चुपड़े हुआ था।

"बोलो ठकुरानी जी! मेरे लायक सेवा। हम तो आपकी प्रजा हैं। आपने क्यों तकलीफ की। मुझे बुला लिया होता। "राव गणपत की आवाज में तंज और मखौल उड़ाने की भावना थी।

"वो दिन कहाँ रहें, राव साहब! अब कौन राजा कौन प्रजा। भाईचारा भी निभ जाए तब जानियो। "गहलड़ की पत्नी ने तंज भांप लिया था। लेकिन आई थी तो अपनी बात तो कहनी ही थी, "ये थाने में बंद है। किसी ने मारपीट की झूठी शिकायत कर दी। पुलिस ने ठा के बंद

कर दिया। अब छोड़ने के पचास हजार मांगती है। मेरे पास तो पचास हजार न है। अगर आप दे सको तो मेहरबानी होगी। जो आपका ब्याज बनेगा हम देनदार हैं। "ठकुरानी ने आवाज को भरसक नरम बनाने का यत्न किया।

"खैर, शिकायत तो झूठी न है। मेरी थानेदार से पिछले हफ्ते ही बात हुई थी। गलती तो ज्यादा गहलड़ की है। लेकिन चलो, अपने को क्या लेना। मेरे पास पचास हजार हैं नहीं। नहीं तो दे देता और वापिस भी न लेता। मैंने ब्याज का काम तो पिछले साल ही बंद कर दिया था। अब जमाना पहले जैसा न रहा। लोगों की आँख में शर्म न रही। ब्याज तो ब्याज लोग मूल भी न देते। बुरा मत मानना, मैं आपकी न कह रहा। मैं तो जमाने की हवा की कह रहा। लेकिन लखपत से पूछ देखो। वो ब्याज का काम करता है। पर वह रहता शहर में है। "गणपत ने कहा तो उसने सोचा, 'है तो इसी का भाई। लेकिन यह तो नाट गया। अब लखपत के पास जाकर देखती हूँ। "

लखपत के घर शहर पहुंची। लखपत ने अच्छी दुमंजिला हवेली छाप रखी थी। लखपत घर पर न था। उसकी पत्नी थी। उसका नाम सुनकर उसे सजे सजाए ड्राइंग रूम में बैठाया। लखपत की पत्नी कीमती साड़ी और गहनों से लदी हुई आयी। उसके व्यक्तित्व का प्रभाव ऐसा था कि ठकुरानी अपने स्थान पर खड़ी हो गई।

खूब गोरा रंग, चमकता हुआ हँसमुख चेहरा, लंबा कद और भरा बदन।

क्या सचमुच यह औरत उसके पति की प्रेमिका रही होगी या कोरी अफवाह है। लेकिन यह सब तो उससे शादी के पहले की बातें है। इसके बारे में उसके पास भी सुनी सुनाई ही है।

"अरे बैठो, बैठो कुंवरानी जी! आप क्यों खड़ी हो गई। हम तो आपकी प्रजा हैं। धन्य भाग हमारे जो आपके दर्शन तो हुए। कुंवर जी तो इधर आते ही नहीं। हमने तो कई बार कहा आपसे मिलवाने को लेकिन उन्होंने मिलवाया ही नहीं। वैसे, कुंवर जी सकुशल तो हैं न! " उसका बातें करने का ढंग भी मोह लेने वाला था। फिर उसका पति इसके रूपजाल में फंस गया था तो क्या आश्चर्य!

"वे हवालात में बंद है, मारपीट के मुकद्दमे में। पुलिसवाले छोड़ने के एवज़ में पचास हजार रुपये मांग रहे हैं। मेरे पास तो है नहीं सोचा राव लखपत से ब्याज पर ले लूँ।" वह अटक अटक कर ही कह पाई, न जाने क्यों वह इस औरत के सामने शर्मिंदा हो रही थी। बहुत छोटा महसूस कर रही थी। लेकिन कहना तो था, मजबूरी थी।

"पचास हजार तो मैं ही आपको दे दूंगी। राव साहब से कहने की जरूरत नहीं है। लेकिन अगर ज्यादा की जरूरत हो तो राव साहब से ही कहना पड़ेगा। ब्याज मैं आपसे लूंगी नहीं। बहनों के बीच ब्याज का व्यवहार नहीं होता। कुंवर साहब छूट जाएं, मेरी दिली इच्छा है। उनको कहना कभी इधर का चक्कर लगा लिया करें।" वह मुस्कराती हुई बोली।

पचास हजार लेकर वह बिल्लू के पास पहुंची।

बिल्लू ने रकम जेब के हवाले करते हुए कहा। बस भाभी बन गया काम।

पचास हजार में से दस हजार बिल्लू ने अपनी जेब में डाल लिए। बाकी चालीस हजार इंस्पेक्टर ने अपनी अंटी में डालकर गहलड़ का जमानती धाराओं में अपराध दर्ज कर दिया।

सोमवार को जब गहलड़ को कोर्ट में पेश किया गया तो बिल्लू ने वकील खड़ा कर जमानत माँग ली। सरकारी वकील ने भी कोई एतराज न किया। गहलड़ जमानत पाकर घर आ गया।

मंगलवार सुबह तैयार होकर गहलड़ ड्यूटी जाने लगा तो उसकी पत्नी ने मना किया तो बोला, "पागल मत बन! बैंक मेरी जगह दूसरा गार्ड बुला लेगा। मेरी सिक्योरिटी एजेंसी के थ्रू नौकरी है। "

यह सुनकर पत्नी ने उसे जाने दिया। वह अपनी गोवर्धन लाल एंड संस की शिकारी मेक की 1996 मॉडल की 12 बोर की दुनाली बंदूक लेकर चला। इस बंदूक से उसे बहुत प्यार था।

अक्सर गुनगुनाते हुए इसे साफ करता। बोल्ट के चार कारतूस अपने साथ रखता।

बैंक पहुंचा तो कोई नया सिक्योरटी गार्ड गेट पर खड़ा था। उससे रामा श्यामि हुई तो पता चला कि वह तो कल ही आ गया था। मैनेजर ने एक दिन भी इंतजार न देखी। उसने सोचा मैनेजर से बात करके देखूँ। आखिर इतने साल से काम कर रहा हूँ। एकदम कैसे हटा दिया।

पता चला कि मैनेजर तो आया नहीं है। कहकर गया है कि गहलड़ आये तो कह देना अपनी एजेंसी से बात कर ले।

गहलड़ ने एजेंसी में फोन मिलाया तो पता चला कि एजेंसी ने भी उसे हटा दिया है। मुकदमा फ़ारिग होने के बाद फिर देखा जाएगा।

वह निराश होकर यह सोचते हूए बाहर निकला कि मैनेजर ने उससे कहने की भी जरूरत न समझी। मेन रोड पर आकर उसने शर्मा टाइप और फोटोस्टेट के बोर्ड की तरफ देखा। उसके मुँह से एक भद्दी गाली निकली। ऐसा मन करा कि दुकान के भीतर जाकर मुकेश के सीने में चार की चार गोलियाँ उतार दे। लेकिन गुस्से और निराशा पर काबू पाता वह वहाँ से चला गया।

संपर्क - 9911956389

लाल सिंह दिल

अनुवाद – जयपाल

लाल सिंह दिल पंजाब के जुझारवादी साहित्यिक आन्दोलन के बड़े कवि हैं। उन्हें अपने जीवन में वर्ग-संघर्ष और जातिगत-संघर्ष से लोहा लेना पड़ा। उनकी कविताएं और आत्मकथा उनके जीवन की त्रासद-कथाएं है। प्रस्तुत है उनकी पंजाबी कविताओं का अनुवाद।

संबोधित

कितने मीठे हैं
ईश्वर को 'संबोधित शब्द'
मेरी इच्छा
मेरे अंतिम शब्द यही हों
कि "तुझ में संपूर्ण विश्वास है मुझे"
मैं चाहता हूं
चुरा लूं ये पंक्तियां
और इंकलाब को संबोधित करूं

बुद्धिजीवियों का दुखांत

बुद्धिजीवी
तेज दौड़ने वाला हिरण है
काल जितना तेज

बुद्धिजीवी
दूर की सोचता है

पर वह
वो खरगोश है
जिस ने कछुए की दौड़ को
मजाक समझा

सोच पलटती नहीं

मैं पलट जाऊं
पर सोच नहीं पलटती
अब पर्दा कैसा ?

ढीठता

हम ढीठ बने रहते हैं
मरने तक
कि वह तो एक दिन आएगा ही
सारी दुनिया मरती है
यहां तक कि इतना भी नहीं सोचते
कि अगर मौत हो
तो कैसी हो

नर्क में

नर्क में
नागफनी के गीत
नागफनी का खाना

शांति

हम शांति की लकीर
खींच रहे हैं
लकीर खींचते रहेंगे
दोस्त हम तुम्हें अभी भी दुश्मन नहीं कहते
बेसक
तुम्हें कठपुतली-नृत्य
नचाने वालों को
कभी माफ नहीं करेंगे
भले ही हम शांति की लकीर
खींच रहे हैं

एक सोच

वे विचार बहुत रूखे थे
मैं तेरे भीगे हुए बालों को
जब मुक्ति समझ बैठा

एटम-बम

अगर जालिम को
सजा दी
तो एटम बम चल जाएंगे
अगर गद्दारों को
बेनकाब किया
तो एटम बम
चल जाएंगे
चल जाएं !

कोढ़ी

ज़मीरें, नजरें और हौसले
सड़ चुके हैं
शरीर कोढ़ी हो गये हैं
कला और साहित्य के सिद्धांतों के पहाड़ों
जैसे ग्रंथ
हवा में खुले पड़े हैं
तेज हवा पन्ने पलटती है
जिन पर कोढ़ी-हाथ रखकर विद्वान बैठे हैं
आदर्श की तस्वीरों को
कूड़े के साथ
बाहर फेंक दिया है
'मोनालिजा' के आशिकों ने

घर सजाए हैं
वे जिन एटमों का डर दिखाते हैं
एटम तो चल चुके हैं
ज़मीरें, दृष्टिकोण और हौसले
सड़ चुके हैं

बच्चियां

महफ़िल सजी हुई है
बच्चे खेल रहे हैं
एक के हाथ में चांद है
एक के सूरज
पूनम और शुमीता
ये एक युग की तस्वीरें हैं

हम वही हैं

दो तीन औजार
मुझे दो तीन औजार
बहुत प्यारे हैं
एक है रम्बी
यह पीछे को चलती है
और काटती है
दूसरी दरांती
कि आगे बढ़ती है धीरे-धीरे
पर जब उसे घुमाया जाता है
तब वो काटती है
तीसरा रंदा
जिसको मिस्त्री चलाते हैं
और उसका बुरादा
वे अपनी तरफ़ ही गिरा लेते हैं
मुझे किसी शायर दोस्त ने कहा था
हम वही हैं

संपर्क - 9466610508

श्री करतारपुर साहब की यात्रा

सुरेंद्र पाल सिंह

एक जनवरी 2024 के लिए आग़ाज़-ए-दोस्ती के 9 शान्तिकर्मी यात्रा पर निकले। हम दो कारों से डेरा बाबा नानक की ओर चल पड़े। जब रास्ते में फतेहगढ़ चूड़ियां आया तो प्रोफेसर जगमोहन सिंह ने बताया कि यहाँ महाराजा रणजीत सिंह के शरीके (कुनबे वाले) रहते थे। पंजाब की संस्कृति में शरीके ईर्ष्या और कॉम्पिटिशन का ऑब्जेक्ट माना जाता है। जैसे कि एक कहावत है- यदि शरीके का मुँह लाल हो तो अपना मुँह भी लाल होना जरूरी है चाहे इसके लिए खुद के मुँह पर थप्पड़ मारने पड़े। तो, जब महाराजा रणजीतसिंह हाथी पर बैठकर फतेहगढ़ चूड़ियां आया तो उसके शरीके के लोग पेड़ों पर चढ़कर बैठ गए ताकि वे हाथी से ऊँचे दिखाई दें।

डेरा बाबा नानक कस्बा इंडो-पाक बॉर्डर पर आखिरी बस्ती है जिससे एक किलोमीटर बाद ही भारत-पाक सीमा से हमें करतारपुर कॉरिडोर की एंट्री मिलती है।

डेरा बाबा नानक के बारे यह दावा किया जाता है कि इसकी स्थापना बाबा नानक की तीसरी पीढ़ी के बाबा धर्मचंद ने की थी। यहाँ अनेक छोटे बड़े गुरुद्वारे हैं जिनमें से अधिकांश गुरु नानक के वशंज होने का दावा करने वाले बेदी वंश से जुड़े हुए हैं। एक गुरुद्वारे के प्रांगण में उदासीन पंथ की स्थापना करने वाले गुरु नानकदेव के पुत्र श्रीचन्द जी से जुड़ा हुआ अष्टकोणीय कुआँ है और 9वीं पीढ़ी के वशंज बाबा काबली मल्ल की समाधि है। दूसरे गुरुद्वारे में शीशे के फ्रेम में जड़ा हुआ एक वस्त्र रखा हुआ है जिसके बारे में वहाँ लिखा हुआ है कि गुरु नानक देव जी का यह चोला बाबा काबली मल्ल बल्ख-बुखारा से लाए थे। इन गुरुद्वारों को 'गुरुद्वारा चोला साहब' के नाम से जाना जाता है। कस्बे में तमाम गलियां और

मुहल्ले बाबा नानक के बेदी वशंजों के नाम पर हैं जिनमें से अधिकांश बाबा माणकचंद और बाबा मेहरचंद के नाम से जुड़े हैं।

डेरा बाबा नानक से करीब एक किलोमीटर की दूरी पर जब हम सीमा पर पहुँचें तो पूरे सिस्टम और बिल्डिंग को देखकर विस्मित हो गए। एक विशाल शेड के अन्दर और बाहर पंजाबी संस्कृति और सिक्ख गुरुओं से जुड़ी अनेक पेंटिंग्स और कलाकृतियां सुरुचिपूर्ण और मनमोहक हैं। किसी भी अंतराष्ट्रीय एयरपोर्ट की तरह तमाम औपचारिकताएं पूरी होने के बाद एक ओपन ऑटो रिक्शा से हमें क़रीब 500 मीटर की दूरी पर पाकिस्तान की सीमा पर छोड़ दिया गया। यहाँ भी पासपोर्ट, परमिट आदि की जाँच और जामातलाशी हुई। प्रत्येक यात्री को बीस अमेरिकन डॉलर यहाँ जमा करवाने होते हैं। भारतीय रुपये के बदले पाकिस्तानी करेंसी भी यहाँ मिलती है।

यहाँ से बस के द्वारा हम श्री करतारपुर साहब की ओर चल पड़े। खूब चौड़ी सड़क के दोनों और उपजाऊ और हरे भरे खेत दिखाई देते हैं। क़रीब चार किलोमीटर की दूरी पर हमारा गंतव्य स्थान था। गंतव्य स्थान जाने वाली सड़क की बाईं ओर करीब एक किलोमीटर की दूरी पर एक गाँव दिखाई देता है।

बस से उतरने के बाद दर्शनी ड्योढ़ी में हमारे समूह का स्वागत पाकिस्तान सुरक्षाबल के एक पुरुष और महिला ने किया। ठेठ पंजाबी में सत श्री अकाल के साथ संबोधन शुरू करते हुए उन्होंने गुरुद्वारा की इमारत, लंगर हॉल, दरबार साहब, प्राचीन कुआँ, खेत, दीवान हॉल, सरोवर, बाज़ार आदि के बारे में समझाया। दर्शनी ड्योढ़ी में ही जोड़ा घर में जूते जमा करवाके हम फोटोग्राफी और भ्रमण पर छोटे बड़े समूहों में निकल पड़े। कड़कती ठण्ड से पाँवों को बचाने के लिए तमाम रास्तों पर मैट बिछाए हुए हैं। पूरा प्रांगण अत्यंत विशाल है जिसके केंद्र में दरबार साहब है। दरबार साहब के मुख्य द्वार के सामने एक मज़ार बनी है जिसपर लिखा हुआ है कि बाबा नानक के मुस्लिम शिष्यों ने श्रद्धावश बाबा जी के वस्त्र और फूलों को यहाँ दफ़न किया था।

दरबारसाहब की पहली मंजिल के बाहर संगमरमर के पत्थर पर लिखा हुआ है कि इसका स्लैब पटियाला के महाराजा भूपेंद्र सिंह द्वारा सन 1920 में एक लाख पैंतीस हज़ार छः सौ रुपये के खर्चे से रखवाया था। करतारपुर की ज़मीन बाबा नानक को मुस्लिम रंधावा परिवार द्वारा दी गई थी और बाबा नानक (1469-1539) ने चार उदासियां (लम्बी यात्राएँ) पूरी करके अपने जीवन के अंतिम 18 वर्ष यहाँ पर खेतीबाड़ी करते हुए आध्यात्मिक संदेश देते हुए गुजारे थे।

दरबार साहब के भूतल पर बाबा नानक की समाधि है। कहा जाता है कि हिन्दू और मुस्लिम शिष्यों द्वारा आपसी विवाद के चलते अन्तिम संस्कार के लिए गुरुनानक जी का

पार्थिव शरीर किसी को भी नहीं मिल पाया था। पहले तल पर गुरुग्रंथ साहिब का पाठ और कीर्तन पारंपरिक तरीके से होता है। पूरे गुरुद्वारे का प्रबन्ध पाकिस्तान गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा किया जाता है। मज़ार के एकदम नज़दीक एक प्राचीन कुआँ है जिसे बाबा नानक खेतों में सिंचाई के लिए करते थे। इसके बगल में एक प्यूरीफायर प्लांट लगा है जिससे इस कुएँ का पानी साफ करके डेढ़ लीटर की प्लास्टिक बोतलों में भरा जाता है और कुछ टूटियां भी पानी पीने के लिए लगाई गई हैं। कोई भी यात्री मर्ज़ी के अनुसार बोतल ले जा सकता है और इच्छानुसार वहाँ पर रखी गई एक टोकरी में पैसे डाल सकता है। कुँए के नज़दीक ही एक चार पांच फुट ऊंचे प्लेटफॉर्म पर शीशे के बक्शे में एक बम रखा हुआ है जिसके बाहर लिखा हुआ है कि इंडियन एयरफोर्स ने सन 1971 की लड़ाई में गुरुद्वारे पर यह बम फेंका था लेकिन चमत्कारिक रूप से इस बम से गुरुद्वारे को कोई नुकसान नहीं पहुंचा।

हमारा अगला पड़ाव रिलिजियस डिस्कोर्स हॉल में था जहाँ बैठने के लिए आरामदायक कुर्सियां हैं और अनेक प्रकार की कलाकृतियां और पेंटिंग्स दर्शायी गई हैं। यहाँ से चलकर हम लंगर हॉल में गए। अन्य गुरुद्वारों की तरह यहाँ भी पंगत में बैठने और बुजुर्गों के लिए बेंच रखे हुए हैं। लंगर में खाने के लिए इतनी वैराइटी हैं कि पेट भर जाता है लेकिन नियत नहीं। मेरे बगल में प्लाटिक की हरे रंग की टोकरीनुमा टोपी ओढे हुए कुछ नौजवान बैठे थे। पूछने पर पता लगा कि वे 17 घण्टे का सफर करके सिन्ध से यहाँ आए थे। मुस्लिम श्रद्धालुओं की संख्या अच्छी खासी थी। लंगर तैयार करने वाले भी अधिकांश पुरुष और महिला सेवादार भी मुस्लिम हैं। सिंध से आए एक परिवार की आठ साल की एक बच्ची प्यार और सत्कार से लंगर बाँट रही थी। यह देखकर तसल्ली हुई कि बाबा नानक की 'वंड छक्को' की भावना आज भी खूबसूरत रूप में जिंदा है।

लंगर के बाद वहीं पर चाय पीने और मिलने जुलने का सिलसिला खत्म होने पर हम दर्शनी ड्योढ़ी वापस आए और जोड़ा घर से अपने अपने जूते वापस लेकर बाहर निकलकर प्रांगण के बाईं ओर बाहर की ओर बने हुए बाज़ार में पहुँचें। बाज़ार में क़रीब 25-30 दुकानें आमने सामने बनी हैं। कपड़े विशेषकर महिलाओं के सूट, जूतियां, मिठाई मुख्यतः सोहन हलवा, डॉयफ्रूट की दुकानों पर शॉपिंग करना खुशनुमा अनुभव था। कीमतें क़रीब क़रीब हमारे देश के बराबर ही हैं। पेमेंट पाकिस्तान की करेंसी में ही होती है जिसके लिए एक्सचेंज काउंटर भी वहाँ मौजूद है।

वापसी पर जब एक मित्र ने पाकिस्तान के बस ड्राइवर को धन्यवाद देते हुए बोला कि ये हिंदुस्तान -पाकिस्तान की दीवारें तोड़ क्यों नहीं दी जाती तो उसके भावुकपूर्ण शब्द थे - दीवारें टूटें या ना टूटें, पर ये मुहब्बत भरा आना जाना और मेलजोल बना ही रहना चाहिए।

संपर्क - 9872890401

मेरे उस्ताद
पण्डित विष्णु कालिया

बलविन्दर 'बालम'

पण्डित विष्णु कालिया जी मेरे साहित्यिक उस्ताद थे। पतला दुबला लम्बी कद काठी का शरीर। गोरा रंग। मधुर संवेदन व्यक्तित्व। हिन्दी, पंजाबी, ऊर्दू, फार्सी तथा अंग्रेजी के विद्वान-साहित्कार। हिन्दी, पंजाबी तथा ऊर्दू के प्रतिष्ठित शायर। सर्वोदय विचारों के व्यक्ति।

अमूमन कुरते-पायजामे के साथ कश्मीरी टोपी पहनते तथा विशेष समागमों में चूड़ीदार कुरता-पायजामा, ऊपर से जचवीं अचकन, जिसके अन्दर-बाहर जेबें होतीं। सिर ऊपर सफेद मायादार तुरले वाली पगड़ी। वह भी सिर के बीच कुल्ला रखकर। पगड़ी के बीच में से ऊपर की और लिफाफेदार तुर्ला तथा पगड़ी के पीछे पीठ पर लम्बा लड़। पैरों में काले रंग का जलसा (पंजाबी जूता) पहनते। एक रोअबदार प्रभावशाली शख्सियत। धैर्व नथ कुसैलेपन का मिश्रण।

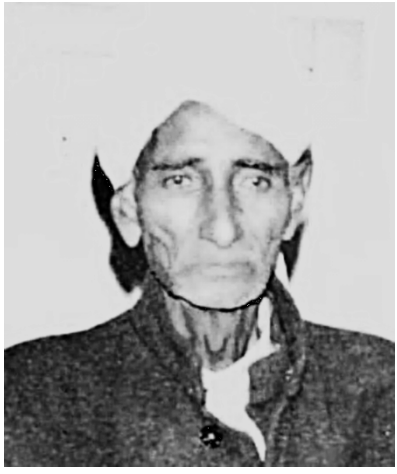

उस्ताद जी के पास साधू-संत, विद्वान लोगों का आना-जाना बनता रहता था, क्योंकि वह धार्मिक गीत, शब्द, भेंटे भी लिखते थे। क्षेत्र के प्रसिद्ध गायक उनके लिखे भजन, शब्द, कीर्तन तथा धार्मिक कार्यो-उत्सवों में गाते थे। राज्य के

प्रसिद्ध संत-महात्मा तथा महा पुरूषों का उनके घर आम आना जाना था। ऋषियों-मुनियों, गुरुओं तथा महांपुरूषों पर कविताएं भी लिखते थे। उन्होंने कुछ धार्मिक पुस्तकें भी लिखीं।

जब मैंने उनको अपना उस्ताद धारण किया, तब वह सीआईडी में बतौर एक आफिसर सेवा निवृत हो चुके थे। आयु उनकी होगी कोई 70 वर्ष के करीब।

मैंने उस समय नई-नई गज़ल लिखनी शुरू की थी, मैंने उनको अपना उस्ताद मान लिया, तो उन्होंने अपने घर में एक छोटी-सी साहित्यिक मुलाकात बुलाई, जिसमें शहर के नामचीन शायर बुलाए। उस समय मैने उस्ताद जी को एक पगड़ी, गुड़ की पेसी तथा एक रूपया नतमस्तक होकर, चरण छूकर भेंट किया।

मुझे ग़ज़ल की बुनियादी तकनीक, बहर (बज़न), प्रतीक-बिम्ब इत्यादि की कोई जानकारी नहीं थी। वैसे मैं उस्ताद जी का नाम पत्र-पत्रिकाओं में पढ़ता रहता था।

एक दिन मैं उस्ताद जी के घर चला गया। हमारे घर से उनके घर का फासला लगभग दस मिनटों का होगा।

केवल एक सड़क पार करके दूसरी गली में उनका एक साधारण घर था। परंतु इतना ज्यादा स्वच्छ-साफ कि सफाई के लिहाज से एक मन्दिर की भांति प्रतीत होता, जैसे कोई प्राचीन मन्दिर हो।

उनका घर गली की दांई ओर था। घर के बाहर दो तख्तों वाला दरवाज़ा तथा दांई-बांई और छोटे-छोटे दो कमरे। बीच गलीनुमा-सा रास्ता तथा आगे छोटा-सा आंगन। आंगन के साथ पीछे फिर छोटे-छोटे दो कमरे। आंगन की दांई ओर छोटी-सी रसोई। रसोई के साथ छोटा-सा गुसलखाना (स्नान घर)। बाईं ओर छोटा-सा स्टोर। बस इतना-सा घर था उस्ताद जी का। छत्तें सहतीरों तथा बल्लियों की। कुल मिलाकर चार मरलों का छोटा-सा घर।

आंगन में लक्कड़ का साधारण-सा तख्तपोश जिसके ऊपर एक साफ चटाई बिछी होती थी। तख्तपोश के ऊपर सैंची, सैंची के ऊपर सफेद कपड़ा तथा ऊपर गीता तथा गुरू ग्रंथ साहिब के श्लोकों की पोथियों का प्रकाश शोभायमान। यह धार्मिक पवित्र कार्य उनकी पत्नी करती थी। उस्ताद की पत्नी धार्मिक ख्यालों वाली महिला थी। शहर के सबसे धनाढ्य महंत्तों की बेटी थी। उनकी सफेद दुधिया साड़ी, दुधिया सफेद बाल, गोरा गुलाबी रंग। दरम्याना कद। हंसता खिलता चेहरा। धैर्य तथा खूबसूरत मुलायम शब्दों का उच्चारण, जैसे शहद टपकता हो। सारे मोहल्ले वाले उनका हृदय से आदर-सत्कार करते। समस्त धर्मों के बारे में संपूर्ण ज्ञान। विशेष तौर पर हिन्दू तथा सिक्ख धर्म के किसी भी विषय पर वह लागतार बोलने की क्षमता रखती थीं। गुरूओं, ऋषियों मुनियों की उनको कई कथाएं, श्लोक, कविताएं, दंत-कथाएं जुबानी (कंठ) याद थीं।

उस्ताद जी हिन्दी, पंजाबी तथा उर्दू साहित्य के लगभग प्रत्येक विषय पर लिखने में परिपक्वता रखते थे। उन्होंने तीनों भाषाओं में गद्य तथा पद्य की कई पुस्तकें लिखीं। उस्ताद जी को भाषा विभाग से साहित्यिक पैंशन भी मिलती थी।

मैंने उनसे लगभग छह वर्ष के करीब साहित्यिक सलाह-मश्विरा किया। साहित्य (शायरी) की बारीकियों के बारे में ज्ञान हासिल किया। उनसे मैंने निजी तथा बाहरी ज़िंदगी के बारे में बहुत कुछ सीखा। उनसे एक पिता जैसा, एक सहृदस मित्र जैसा प्यार हासिल किया।

वह धैर्य में रहने वाले एक संतुलित सोच के पारदर्शी व्यक्ति थे। झूठ सामने आता तो क्रोधित हो उठते। नशों के बहुत खिलाफ थे। एकदम शाकाहारी थे। मैंने उनसे एक इंसान वाले सभी गुण सीखे।

वह अपनी ईमानदारी, अनुशासन, सच्चे देश भक्त वाली, अनेकानेक स्वंय बीती सच्ची कहानियां भी सुनाते। अंध-विश्वास, रीति रिवाजों के डटकर खिलाफ थे। उस्ताद जी अडियल तथा कब्बे (कड़वे) स्वभाव के व्यक्ति थे परंतु दिल के कोरे, रूह के सच्चे थे।

उनके बहुत सारे शिष्य उनके कड़वे स्वभाव के कारण ही उनसे दूर हो गए। वह आदमी का निरीक्षण, परीक्षण तथा अजमायश करते और फिर शिष्य बनाते। शिष्य में क्या साहित्य का सेंक है तब ही उसको शिष्य बनाते थे।

मैं तथा एक और शिष्य ही उनके अंतिम समय तक साथ रहे। शेष सब उनके स्वभाव से परेशान होकर भाग गए। सच्चे तथा ईमानदार बंदे से उनकी बहुत बनती थी। न्योछावार करने का तैयार हो जाते।

सीआईडी महकमें की नौकरी के दौरान वह ईमानदारी की वजह से कई बार सस्पैंड हुए। उन्होने मुझे बताया कि एक बार वह एक शहर के सिटी पुलिस प्रभारी थे तो एक एसएसपी ने उन्हें कहा कि मेरे बच्चों को सुबह-शाम स्कूल छोड़ने तथा ले जाने का कोई इंतज़ाम करें तथा घर की जरूरी वस्तुएं भी पहुंचाई जाएं।

तब उस्ताद जी ने उस एसएसपी को साफ इन्कार कर दिया। जिसके बदले उस्ताद जी के ऊपर, एसएसपी ने एक झूठा केस डाल दिया, कैद भी करवाई परंतु कुछ वर्षों के पश्चात उस्ताद जी

बरी हो गए। परंतु एसएसपी.की गुलामी के आगे झुके नहीं।

उस्ताद जी ने बताया कि एक बार जब वह सीआईडी में आफिसर थे तो तब नया-नया भारत आज़ाद हुआ था तो उस समय कामरेड तेजा सिंह स्वतंत्र जी का छोटा भाई मेदन सिंह जो एक स्वतंत्रता संग्रामी, साहित्याकार, नाटककार, अभिनयकार, चित्रकार, ड्रिफट वूडज़ शिल्पी, पीपल के सूखे पत्तों पर चित्रकारी करने वाला परिपक्व कलाकार (मुसत्तिवर) था।

मेदन सिंह मदन उस्ताद जी का पक्का दोस्त था। मेदन जी ने पद्य-गद्य पर कई पुस्तकें साहित्य की झोली में डाली।

मेदन जी दो उम्र कैद की सजा भुक्त चुके थे। उन्होंने जेलों में बहुत सुधार किए। जेलों में सुधारवादी, मानवतावादी, देष भक्ति के कई नाटक खेले। वह परिपक्व कलाकार, नाटक के सूत्रधार थे। उन्होंने जेल में रह कर एक लघु फिल्म भी बनाई, जिसमें वह स्वंय हीरो थे। प्राचीन पर्दे वाली यह फिल्म आज भी उनके परिवार के पास मौजूद है।

मेदन जी गौरे रंग के, ऊंचे कद काठ के तथा आकर्षिक शख्सियत के मालिक थे।

उस्ताद जी ने बताया कि महकमें की ओर से एक बार उनकी ड्यूटी लगाई गई कि भगोड़े मेदन सिंह को ज़िंदा पकड़ कर गिरफ्तार किया जाए। क्योंकि मेदन जी के ऊपर देशद्रोह के कई केस अंग्रेजों ने डाले हुए थे।

महकमे को पता नहीं था कि उस्ताद जी तथा सरदार मेदन सिंह जी की साहित्यिक तथा गहरी निजी दोस्ती है।

रात के समय उस्ताद जी मेदन जी के गांव में गए जो कि भारत-पाक सीमा पर स्थित था तथा मेदन जी से कहने लगे, मेरी सरकारी तौर पर तुझे ज़िंदा गिरफ्तार करने की डयूटी लगी है। कई और मुलाज़िम भी तेरी खोज में हैं; इस तरह कर तू मेरे घर आ जा क्योंकि सरकार ने तुझे पकड़ने के लिए पुलिस की कई टीमें बना रखी हैं, जो आपके ठिकानों पर, रिश्तेदारों के घरों पर, दोस्तों के घरों पर तुझे पकड़ने के लिए जाएंगे। सरकार ने एक माह का समय दिया है। ”

फिर सुबह होने से पहले-पहले ही मेदन जी भेस बदल कर उस्ताद जी के घर आ गए। एक महीना उनके घर में ही रहे। वहां ही उनके भोजन तथा रैन बसेरे का इंतजाम कर दिया था। किसी को खबर तक नहीं लग सकती थी कि मेदन जी कहां हैं।

उस्ताद जी अपनी सरकारी ड्यूटी के मुताबिक मेदन जी को ढूंढने के लिए बाहर चले जाते और देर रात को घर आते। कभी-कभी वह सप्ताह भर घर नहीं आते। पुलिस की टुकड़ियों के साथ मेदन जी को ढूंढने की कोशिश करते रहते। मेदन जी का कोई ठिकाना न छोड़ते। पुलिस तथा सीआईडी ने मेदन जी का कोई ठिकाना न छोड़ा परंतु मेदन जी को कहां ढूंढते?

इस तरह एक माह का समय बीत गया। मेदन जी का कोई पता न चला। उस्ताद जी ने महकमें को लिखकर भेज दिया कि मेदन सिंह मेदन का कोई सुराग हाथ में नहीं लगा।

उस्ताद जी ने एक माह तक मेदन जी को अपने ही घर में रखा तथा स्वयं उनको ढूंढने के लिए कई-कई दिन ड्यूटी पर बाहर रहते। एक दिन में शाम ढले उस्ताद जी को मिलने गया तो उन्होंने मुझे बताते हुए कहा, यार, बालम, तेरी आंटी (उस्ताद जी की पत्नी) दो तीन दिनों से सख्त बीमार है, बहुत ईलाज करवाया परंतु कोई फर्क नहीं पड़ रहा। अच्छे अच्छे डॉक्टरों को दिखाया है। बीमारी का पता ही नहीं चलता।"

कुछ दिनों के पश्चात ही माता जी इस फानी दुनिया को अलविदा कह गए। माता जी की आयु लगभग 75 वर्ष के करीब थी।

मुझे उस्ताद जी ने बताया कि उन्होंने अपनी पत्नी से 'लव मेरिज' की थी। बहुत धनाढ्य घर की बेटी थी। माता जी के अभिभावक शहर के जाने माने लोग थे। उस्ताद जी मामूली पुलिस मुलाजिम। उस्ताद जी की निष्ठा तथा ईमानदारी की वजह से उनकी पत्नी ने उनसे 'लव मैरिज' की थी। घर से भागकर उनकी पत्नी ने गुप्त शादी की थी। कुंवारेपन में, जितनी उस्ताद जी की तनख्वाह थी उतने धन के तो उनकी पत्नी वस्त्र ही पहन लेती थी। जब घर से भागी थी तो उनकी माता ने (पत्नी की मां ने) एक किलो सोना साथ दे दिया था।

उस्ताद जी के दो लड़के थे, एक बैंक में मैनेजर तथा दूसरा इंटेलीजैंस ब्यूरो में उच्चाधिकारी था। दोनों विवाहित तथा अपने-अपने परिवार में खुशहाल। घर में उस्ताद जी तथा उनकी पत्नी ही रहते थे।

उस्ताद जी के ससुराल बहुत धनाढ्य थे परंतु उस्ताद जी से बहुत डरते थे क्योंकि उस्ताद जी ने कभी किसी के आगे हाथ नहीं फैलाए थे। उस्ताद जी के सालों ने कई बार कहा था, पण्डित जी, शहर के जिस एरिया से जितना बड़ा प्लाट (भूमि) चाहिए ले लो, कोठी बनवा लो। हम कोठी बनवाने के लिए धन भी दे देंगें। "

परंतु उस्ताद जी ने उनकी एक न मानीं तथा अपनी सच्ची निष्ठा तथा ईमानदारी की जान-शान-मान से जीवन व्यतीत किया। भिखारी तथा लालची बन कर वह नहीं रहे। न पिछल्लगू न डुगडुगी बने। लालची होते तो कोठी बनवा सकते थे। वह सारी उम्र छोटे-से पुराने घर में ही रहे। किसी की भी आर्थिक गुलामी नहीं की।

वह मुझे कहा करते थे देख पुत्र, ईमानदारी की उदाहरण समाज को, पीढ़ियों को रौशनी देती रहती है। उन्नति का सूत्र ही ईमानदारी है। समाज में उदाहरण तथा पथ प्रदर्शक बनते हैं जो ईमानदारी से सच्चा स्वच्छ जीवन व्यतीत करते हैं। बंदे ने कोई हज़ार वर्ष थोड़ी जीना है। यह जायदाद, धन दौलत यहीं ही रह जाएगी। देश के लिए, समाज के लिए कुछ ऐसा छोड़ जाओ कि दुनिया आपको याद करे। आपकी सच्ची निष्ठावान कर्मशीलता से कोई सीख

सके। अपनी कमाई में संतुष्टि होनी चाहिए। मीट मुर्गे खाने वाले, शराब पीने वाले, धन दौलत वाले कोई हजार वर्ष नहीं जीएंगे। बंदे की आयु ज्यादा से ज्यादा सो वर्ष ही है। ईमानदारी तथा सच्चाई का पल्लू मत छोड़ो। ”

उस्ताद जी की पत्नी 75 वर्षों के करीब इस फानी दुनिया को अलविदा कह गई। माता जी की मृतक देह (पार्थिक शरीर) आंगन में पड़ी थी। दोपहर बाद उनका संस्कार करना था, उनके पुत्र, बहूएं, पोते, पोतियां, रिश्तेदार, मित्र, संग-स्नेही सब एकत्रित थे। चारों ओर शोक की तनहाई पसरी हुई थी।

उस्ताद जी मुझे तथा दूसरे शिष्य को आवाज लगाकर कहने लगे, “बाज़ार जाओ, और अर्थी बनवा कर लाओ, परंतु सुनो, जो अर्थी बनवानी है उसमें डोली बनवा कर लाना। “मैंने तथा गुरूभाई ने हैरानी से कहा, उस्ताद जी, वह कैसे हो सकता है? कि अर्थी में डोली बनाई जा सके, यह तो कभी सुना ही नहीं, न देखा है। ”

वह क्रोध में आकर कहने लगे, आपको जो कहा, ‘‘वैसे ही करते जाओ। सुना आप ने। “मैं और मेरा गुरूभाई दोस्त असमंजस में पड़ गए, कि अब क्या करें?

ख़ैर, हम एक तरखान दोस्त की दुकान पर गए। उसको निम्रता से विनय करते हुए कहा, यार, तू जितने पैसे मर्ज़ी ले ले परंतु तू अर्थी में डोली बना दे। ”

वह सुनकर बहुत हैरान हुआ, यह कैसे हो सकता है? यार, यह तो मैंने भी देखा नहीं, न सुना है कि अर्थी में डोली बनाई जाए। ”

हमने उसको हाथ जोड़कर कहा, “यार, हमारी इज़्जत का सवाल है, तू पैसे जितने मर्ज़ी ले परंतु आरजी तौर पर किसी भी ढंग से, तरीके से इस तरह फट्टियों (लक्कड़) को फिट कर दे के डोली नुमां लगे। ”

ख़ैर, उसने आरजी तौर पर इस तरह फट्टियों में जगह छोड़कर अर्थी में डोली बना दी। हम दोनों वह डोली नुमां अर्थी रिक्शे के ऊपर रखकर ले आए। सब लोग देखकर हैरान हो गए। कुछ लोग मुंह छुपाकर हंसने लगे। सरगोशियों को पंख लग गए, परंतु उस्ताद जी को तो किसी की कोई परवाह नहीं थी।

डोली नुमा अर्थी में माता जी की मृतक देह को लाल रंग की खूबसूरत साड़ी पहना कर, एक दुल्हन की भांति सजाकर रख दिया। उस्ताद जी ने पहले माता जी (पत्नी) का कई बार माथा चूमा फिर पैरों में सिर रखकर ऊंची-ऊंची रोए। उनको बड़ी मुश्किल से दूर किया गया।

जब संस्कार के लिए श्मशानघाट पहुंचे तो वहां का एक मलंग सा बंदा, जो श्मशानघाट की देखभाल के लिए होगा, वह बंदा डोली नुमां अर्थी देखकर कहने लगा, “यह ऐसा नहीं हो सकता। डोली चिता में नहीं रखी जा सकती। ”

क्योंकि उस्ताद जी ने कहा, डोली नुमां अर्थी सहित ही पार्थिक देह को लक्कड़ों में रखना है। डोली से पार्थिक देह बाहर नहीं निकाली जाएगी।

सब लोग हैरान थे परंतु बोलने की कोई जुररत नहीं कर रहा था। उस्ताद जी के क्रोध में आकर मुझे कहा, "इस बंदे को बीस रूपए दे दो, इस साले ने दारू पीनी होगी। "

हमने उस मलंग बंदे को बीस रूपए दे दिए तथा वह बीस रूपए लेकर चुपचाप वहां से चला गया। आख़िर सब शोक-धार्मिक रस्में करने के बाद डोली नुमां अर्थी के सहित ही पार्थिव देह को चिता में रख दिया। किसी ने भी विरोध नहीं किया। क्योंकि सबको मालूम था कि उस्ताद जी अब किसी की भी नहीं मानेंगें उनकी भावुकता बुलंदी पर पहुंच चुकी थी।

संस्कार के बाद सब लोग अपने-अपने घरों को चले गए। जो भी रस्में थीं, रीति रिवाज थे सब कर दिए गए।

एक दिन मैं उस्ताद जी को मिलने गया तो वह बड़े भावुक होकर कहने लगे, यार बालम, अब हमने भी चले जाना है, हमारा दिल नहीं लगता। "

मैंने कहा, उस्ताद जी ऐसी बातें मत कहो, आप ने बड़ी लम्बी उम्र जीना है। आपकी सेहत बिल्कुल ठीक है।"

आंखों में आंसू भरते हुए कहने लगे,

नहीं, इस महीने के भीतर ही हमने भी चले जाना है।

सर्दियों के दिन थे, उस्ताद जी रात रजाई में

पलंग पर सिरहाना पीठ लगाकर सोए हुए थे।

सुबह उनकी बहू ने आकर देखा तो उस्ताद जी दुनिया छोड़ चुके थे।

ख़ैर उस्ताद जी पूरे 25 दिनों के बाद इस फानी दुनिया को अलविदा कह गए।

संपर्कः गुरदासपुर (पंजाब), मोः 9815625409

विभिन्न प्रकार के कर्मकाण्ड, धार्मिक अनुष्ठान भोली-भाली जनता को लूटने के लिए बनाये गये है। यह एक पुश्तैनी धार्मिक लूट है। जाति और धर्म का भ्रमजाल अन्याय और शोषण की प्रक्रिया को बनाये रखने के लिए फैलाया गया है।

जोतिबा फुले

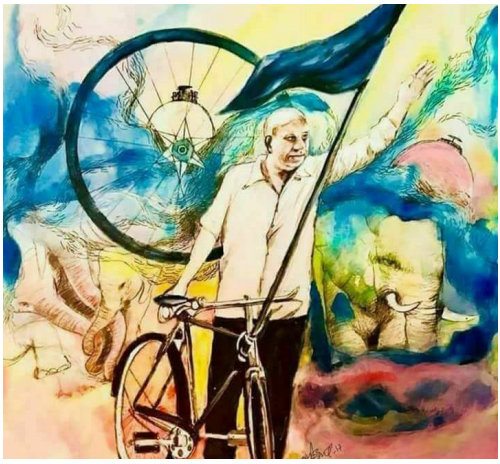

काँशीराम दलित आक्रोश का रचनात्मक उपयोग

अमरनाथ

1. मैं कभी शादी नहीं करूँगा, शादी के जंजाल में फँसने के बाद मैं अपने समाज के दबे कुचले लोगों और अपने देश के लिए कुछ नहीं कर पाऊँगा।
2. मैं घर कभी नहीं जाऊँगा, मैंने घर वालों से अपने सारे रिश्ते समाप्त कर दिए हैं। अब पूरा भारत ही मेरा घर होगा। भारत का दलित शोषित समाज ही मेरा परिवार होगा।
3. मैं अपने लिए कभी कोई संपत्ति नहीं बनाऊँगा। भारत के दबे कुचले लोगों के लिए मैं काम करूँगा। वे ही मेरी संपत्ति होंगे। मेरी संपत्ति भी उनके लिए ही होगी।
4. मैं किसी भी सामाजिक समारोह, जन्मोत्सव, विवाहोत्सव, मृत्यु आदि में सम्मिलित नहीं होऊँगा।
5. मैं आगे कोई नौकरी नहीं करूँगा। मैंने नौकरी छोड़ दी है। मैं कोई भी पारिवारिक दायित्व नहीं निभाऊँगा। अब मैंने पूरे समाज का दायित्व संभाल लिया है।

उक्त पाँच सूत्रीय संकल्प काँशीराम (15.3.1934- 9.10.2006) के हैं जिसे 1971 में अपनी डी.आर.डी.ओ. की सरकारी नौकरी से त्यागपत्र देने के बाद अपनी माँ को लिखे 24 पृष्ठ के पत्र में उन्होंने व्यक्त किया है।

अपने अंतिम दिनों तक काँशीराम ने अपने उक्त संकल्पों को अक्षरश: निभाया। उनके नाम से न तो एक गज जमीन थी और न तो कोई कमरा। उनके पास कोई बैंक बैलेंस नहीं था। वे कभी अपने परिवार में नही गए। उनके परिवार के किसी भी सदस्य ने उनसे कभी कोई लाभ नही उठाया। यहाँ तक कि काँशीराम अपने पिता के अंतिम संस्कार तक में भी शामिल नहीं हुए।

काँशीराम का जन्म 15 मार्च 1934 को पंजाब के रोरापुर में एक रैदासी सिख परिवार में हुआ था। यह एक ऐसा समाज है जिन्होंने अपना धर्म छोड़ कर सिख धर्म अपनाया था। काँशीराम के पिता एस. हरि सिंह बहुत कम शिक्षित थे लेकिन उन्होंने अपने सभी बच्चों को ऊँची शिक्षा देंने का प्रयास किया। काँशीराम के दो भाई और चार बहने थीं। काँशीराम सभी भाई-बहनों में सबसे बड़े और सबसे अधिक शिक्षित भी थे। उन्होंने बी.एस-सी. तक की पढाई की थी। बी.एस-सी. के बाद 1958 में वे पूना में डिफेंस रिसर्च एंड डेवलपमेंट ऑर्गेनाइजेशन (डीआरडीओ) में सहायक वैज्ञानिक के पद पर नियुक्त हो गए।

ऑफिस में काम करते हुए उन्होंने बार- बार जातिगत आधार पर भेद- भाव महसूस किया। 1965 में डॉ. अम्बेडकर के जन्मदिन पर सार्वजनिक अवकाश रद्द किए जाने का उन्होंने अपने साथियों के साथ विरोध किया। इसी बीच उन्होंने अम्बेडकर की पुस्तक 'एनीहिलेशन ऑफ कास्ट' पढ़ी और उससे बहुत प्रभावित हुए। कहा जाता है कि इस पुस्तक को पढ़ने के बाद उन्हें अगले दो दिन तक नींद नहीं आई। वे जातिगत भेद-भाव को ख़त्म करने के लिए काम करने लगे।

प्रारंभ में काँशीराम 'रिपब्लिकन पार्टी ऑफ इंडिया' से जुड़े किन्तु जल्दी ही उनका इस पार्टी से मोह-भंग हो गया। सामाजिक काम करने के उद्देश्य से उन्होंने 1971 में अपनी सरकारी नौकरी छोड़ दी और अपने एक सहकर्मी के साथ मिलकर अनुसूचित जाति-जनजाति, अन्य पिछड़ी जाति और अल्पसंख्यक कर्मचारी कल्याण संस्था की स्थापना की। यद्यपि इस संस्था का गठन पीड़ित समाज के कर्मचारियों का शोषण रोकने और असरदार समाधान के लिए किया गया था, लेकिन इस संस्था का मुख्य उद्देश्य था लोगों को शिक्षित और जाति-प्रथा के बारे में जागृत करना। धीरे-धीरे इस संस्था से अधिक से अधिक लोग जुड़ते गए और इसका विस्तार होने लगा। सन् 1978 में काँशीराम ने अपने सहकर्मियों के साथ मिलकर 'बामसेफ' (आल इंडिया बैकवार्ड एंड माइनॉरिटी कम्युनिटीज एम्प्लॉईज फेडरेशन) का गठन किया। बामसेफ के माध्यम से वे सरकारी नौकरी करने वाले दलित शोषित समाज के लोगों से एक निश्चित आर्थिक सहयोग लेकर समाज के हितों के लिए संघर्ष करते रहे।

इस संस्था का आदर्श वाक्य था- "शिक्षित बनो, संगठित बनो और संघर्ष करो।" इस संस्था ने अम्बेडकर के विचार और उनकी मान्यताओं को लोगों तक पहुँचाने का बुनियादी कार्य किया। बामसेफ का उद्देश्य अनुसूचित जातियों, अनुसूचित जनजातियों, अन्य पिछड़े वर्ग और अल्पसंख्यकों के शिक्षित सदस्यों को अम्बेडकरवादी सिद्धांतों का समर्थन करने के लिए राजी करना और उन्हें संगठित करना था। काँशीराम के नेतृत्व में इस संगठन ने तेजी से सफलता प्राप्त की और शहरी क्षेत्र तथा छोटे शहरों में रहने वाले मध्यवर्गीय दलित व पिछड़े लोगों को वैचारिक स्तर पर समृद्ध और संगठित किया।

सन् 1980 में उन्होंने 'अम्बेडकर मेला' नाम से पद यात्रा शुरू की। इसमें अम्बेडकर के जीवन और उनके विचारों को चित्रों और कहानी के माध्यम से दर्शाया गया। इसके पश्चात काँशीराम ने अपना प्रसार तंत्र और भी मजबूत किया और जाति-प्रथा के संबंध में अम्बेडकर के विचारों का लोगों के बीच सुनियोजित ढंग से प्रचार किया। इस कार्य में भी उन्हें लोगों का भरपूर समर्थन मिला। 1981 में काँशीराम ने बामसेफ के समानांतर 'दलित शोषित समाज संघर्ष समिति' (जिसे डीएसफोर के नाम से भी जाना जाता है) की स्थापना की। इस समिति की स्थापना दलित कार्यकर्ताओं के बचाव तथा उन्हें संगठित करने के लिए की गई थी जिन पर जाति-प्रथा के बारे में जागरूकता फैलाने के लिए हमले होते थे।

1984 में काँशीराम ने 'बहुजन समाज पार्टी' के नाम से राजनीतिक दल का गठन किया। इसके साथ ही उन्होंने स्वीकार किया कि "सत्ता ही सभी चाभियों की चाभी है।" 1986 में उन्होंने यह कहते हुए कि अब वे बहुजन समाज पार्टी के अलावा किसी और संस्था के लिए काम नहीं करेंगे, अपने आपको सामाजिक कार्यकर्ता से एक राजनेता के रूप में परिवर्तित कर लिया। पार्टी की बैठकों और अपने भाषणों के माध्यम से काँशीराम ने कहा कि अगर सरकारें कुछ करने का वादा करती हैं, तो उसे पूरी भी करनी चाहिए अन्यथा यह स्वीकार कर लेनी चाहिए कि उनमें वादे पूरी करने की क्षमता नहीं है। दलितों के उत्थान की छटपटाहट और उनके हाथ में सत्ता होने का सपना देखने वाले काँशीराम ने इसी दौर में मायावती की क्षमता को पहचाना और उन्हें राजनीति में आने के लिए प्रेरित किया।

बीएसपी (बहुजन समाज पार्टी) के गठन के बाद काँशीराम ने कहा कि उनकी 'बहुजन समाज पार्टी' पहला चुनाव हारने के लिए, दूसरा चुनाव नजर में आने के लिए और तीसरा चुनाव जीतने के लिए लड़ेगी। 1988 में उन्होंने भावी प्रधान मंत्री वी.पी.सिंह के खिलाफ इलाहाबाद सीट से चुनाव लड़ा और प्रभावशाली प्रदर्शन किया, लेकिन 70, 000 वोटों से हार गए। वे 1989 में पूर्वी दिल्ली (लोकसभा निर्वाचन क्षेत्र) से लोक सभा चुनाव लड़े और चौथे स्थान पर रहे। इसके बाद 1991 में, काँशीराम ने मुलायम सिंह के साथ गठबंधन किया और इटावा से चुनाव लड़ने का फैसला किया। इस चुनाव में, काँशीराम ने अपने निकटतम भाजपा प्रतिद्वंद्वी को 20, 000 मतों से हराया और पहली बार लोकसभा में प्रवेश किया। 1991 में इटावा से उपचुनाव जीतने के बाद उन्होंने स्पष्ट किया कि चुनावी राजनीति में नया समीकरण आरम्भ हो गया है। इसके बाद उन्होंने दिल्ली की गद्दी तक पहुँचने के इरादे से मुलायम सिंह यादव की समाजवादी पार्टी के साथ गठबंधन किया।

बाद में काँशीराम ने 1996 में होशियारपुर से 11वीं लोकसभा का चुनाव जीता और दूसरी बार लोकसभा पहुँचे। अपने ख़राब स्वास्थ्य के कारण उन्होंने 2001 में सार्वजनिक रूप से मायावती को अपना उत्तराधिकारी घोषित कर किया।

सन 2002 में डॉ. अम्बेडकर के धर्म-परिवर्तन की 50 वीं वर्षगाँठ के मौके पर यानी, 14 अक्टूबर 2006 को काँशीराम ने बौद्ध धर्म ग्रहण करने की अपनी इच्छा जाहिर की। काँशीराम की इच्छा थी कि उनके साथ उनके 5 करोड़ समर्थक भी इसी समय धर्म-परिवर्तन करें। उनकी धर्म-परिवर्तन की इस योजना का सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा यह था कि उनके समर्थकों में केवल दलित ही शामिल नहीं थे बल्कि विभिन्न जातियों के लोग भी शामिल थे, जो भारत में बौद्ध धर्म के समर्थन को व्यापक रूप से बढ़ा सकते थे। हालांकि, 9 अक्टूबर 2006 को उनका निधन हो गया और उनकी बौद्ध धर्म ग्रहण करने की अभिलाषा अधूरी रह गयी।

मायावती का कहना है कि उन्होंने और काँशीराम ने तय किया था कि वे बौद्ध धर्म तभी ग्रहण करेंगे जब केंद्र में उनकी 'पूर्ण बहुमत' की सरकार बनेगी। वे ऐसा इसलिए करना चाहते थे क्योंकि तभी वे धर्म बदलकर देश में धार्मिक बदलाव ला सकते थे। क्योंकि तब उनके हाथ में सत्ता होती और उनके साथ करोड़ों लोग एक साथ धर्म बदलते। मायावती का कहना था कि यदि वे सत्ता पर कब्ज़ा किये बिना ही धर्म बदलेंगे तो उनके साथ कोई खड़ा नहीं होगा और केवल 'उन दोनों' का ही धर्म बदलेगा। इससे समाज में किसी तरह की धार्मिक क्रांति की लहर नहीं उठेगी।

काँशीराम को मधुमेह और उच्च रक्तचाप की बीमारी थी। 1994 में उन्हें दिल का दौरा भी पड़ चुका था। 2003 में उन्हें एक और दौरा पड़ा। 2004 के बाद खराब सेहत के चलते उन्होंने सार्वजनिक जीवन से सन्यास ले लिया। 9 अक्टूबर 2006 को दिल का दौरा पड़ने से उनकी मृत्यु हो गई। काँशीराम की अंतिम इच्छा के अनुसार उनका अंतिम संस्कार बौद्ध रीति-रिवाज से किया गया।

काँशीराम ने समाज के दलित और पिछड़े वर्ग के लिए एक ऐसी जमीन तैयार की, जहाँ पर वे अपनी बात कह सकें और अपने हक के लिए लड़ सकें। काँशीराम की जीवनी लिख चुके बद्री नारायण कहते हैं, "काँशीराम की विचारधारा अम्बेडकर की विचारधारा का ही एक नया संस्करण है।" निश्चित रूप से अम्बेडकर की तरह काँशीराम ने हिंदी क्षेत्र की सियासी व्यवस्था को भली-भांति समझा था और उसमें बदलाव का रास्ता निकाला था।

काँशीराम ने पार्टी और दलितों के हित के लिए समाजवादी पार्टी, भारतीय जनता पार्टी व काँग्रेस, सभी का साथ दिया और सहयोगी बने। सत्ता के लिए किसी से भी हाथ मिलाने में उन्हें संकोच नहीं हुआ। उनके अनुसार राजनीति में आगे बढ़ने के लिए यह सब जायज है। काँशीराम ने 1995 में समाजवादी पार्टी को झटका देकर भारतीय जनता पार्टी के साथ हाथ मिलाया और अटलबिहारी वाजपेयी के नेतृत्व वाली भाजपा की सरकार जब केन्द्र में गिर रही थी तब सरकार के खिलाफ मतदान किया। काँशीराम का सिद्धाँत था कि बहुजन की सेवा करने के लिय़े हर हाल में सत्ता के साथ या सत्ता के करीब रहना होगा। वे मुख्यमंत्री बनवाते रहे और राजनीतिक दलों को समर्थन देते रहे। किन्तु काँशीराम ने खुद पद पाने की कभी महत्त्वकाँक्षा प्रदर्शित नहीं की।

काँशीराम दूसरे नेताओं की तरह सफेद खादी के कपड़े नहीं पहनते थे। संघर्ष के दिनों में बाजार से खरीदे पैंट- शर्ट और बाद में सफारी सूट उनका पहनावा बना। दूसरे नेताओं से उनका यह फर्क सिर्फ कपड़ों तक नहीं था। काँशीराम के जीवन का हर पहलू दूसरे बड़े राजनेताओं से अलग था।

जाति के भेदभाव में गले तक डूबे समाज के दूसरे नेता जहाँ जाति-उन्मूलन की बात करते रहे, काँशीराम ने खुलकर जाति की बात की और वह भी बड़े तल्ख तेवर के साथ। उन्होंने सबसे ज्यादा चोट करने वाले नारे दिए, 'तिलक, तराजू और तलवार, इनके मारो जूते चार' या 'ठाकुर बाभन बनिया चोर, बाकी सब हैं डीएसफोर' उनके द्वारा चलाए गए बहुप्रचलित नारे थे।

1995 में मायावती को उत्तर प्रदेश का मुख्यमंत्री बनाने मे काँशीराम कामयाब हो गए। हालाँकि मायावती जिस तेजी से उ.प्र. में आईं, उसी तेजी से वे सिर्फ एक जाति की नेता बनकर रह गईं। दलित आंदोलन देखते ही देखते सोशल इंजीनियरिंग बनकर रह गया। इस त्यागी और विरागी महापुरुष की विरासत को आगे ले जाने का संकल्प लेने वाली दलितों की नेता मायावती नोटों की माला और सोने का मुकुट पहनकर सार्वजनिक प्रदर्शन करने लगी। सत्ता में आने के दस सालों के भीतर ही बीएसपी का आन्दोलन "ब्राह्मण शंख बजाएगा" और "हाथी नहीं गणेश है" जैसे नारों की भेंट चढ़ गया। बहुजन समाज पार्टी के जनाधार पर इसका विपरीत असर पड़ा। एक समय पंजाब, मध्य प्रदेश, बिहार, राजस्थान

जैसे समूचे हिंदी पट्टी में तेजी से फैली इस पार्टी की गति दो दशक के अंदर ही सिमटती चली गई। यह काँशीराम का दुर्भाग्य है कि उनकी विरासत को सिर्फ मायावती तक समेट कर देखा जाने लगा अथवा उनकी वारिस मायावती जैसी महिला बनीं।

किन्तु काँशीराम के योगदान को सिर्फ बहुजन समाज पार्टी की सफलता और विफलता से नहीं आँका जा सकता। बीएसपी काँशीराम के द्वारा किए गए बड़े बदलाव का एक हिस्सा भर है। उनका योगदान बहुत बड़ा है। उनका योगदान सबाल्टर्न इतिहास के जरिए दलितों में विद्रोह की चेतना जगाना है। काँशीराम ने ज्योतिबा फुले, सावित्री बाई फुले, झलकारीबाई और ऊदा देवी जैसे प्रतीकों को दलित चेतना का प्रतीक बनाया। काँशीराम ने अनुसूचित जातियों, अनुसूचित जनजातियों और अन्य पिछड़ा वर्ग को मिलाकर जो युग्म बनाया वह भारतीय राजनीति के लिए एक नवीन प्रयोग था।

विवेक कुमार कहते हैं, "उन्होंने दूसरे वंचित समाज को बताया कि आपका वोट प्रतिशत 85 फ़ीसदी है और 15 फ़ीसदी वाले राज कर रहे हैं। तो यह एक नवीन प्रयोग था। नवीन नारे थे। और लोगों को आंदोलित करने की एक नवीन प्रक्रिया थी। एक कैडर था।" वे कहते हैं कि, "आरएसएस और लेफ्ट पार्टी की तरह उन्होंने बहुजन, दलित आंदोलन में कैडर परम्परा की शुरुआत की।"

आज कुछ दलित हिंसा की राजनीति में भी शामिल होते दिखाई देते हैं। किन्तु काँशीराम हमेशा अतिवाद का विरोध करते रहे। उन्होंने कभी भी उग्रवाद को पनपने नहीं दिया। वे दलितों को हिंसा के रास्ते पर जाने से हमेशा रोकते रहे। निश्चित रूप से डॉक्टर अम्बेडकर के निधन के बाद दलित आंदोलनों में पैदा हुए शून्य को मिटाकर बहुजन आन्दोलन को आगे बढ़ाने में काँशीराम की केन्द्रीय भूमिका है।

काँशीराम पहले ऐसे व्यक्ति हैं जिन्होंने शोषित समाज की निष्क्रिय पड़ी राजनीतिक चेतना को जगाया था। डॉ. भीमराव अम्बेडकर ने संविधान के माध्यम से शोषित समाज के विकास के लिए बंद दरवाजे खोल दिए थे, लेकिन इस विकास रूपी दरवाजे के पार पहुँचाने का कार्य काँशीराम ने किया।

सन 1982 में काँशीराम ने "चमचा युग" (The Era of the Stooges) नामक पुस्तक लिखी, जिसमें उन्होंने कुछ दलित नेताओं के लिए चमचा शब्द का इस्तेमाल किया था। उन्होंने कहा कि ये दलित लीडर केवल अपने निजी फायदे के लिए भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) और काँग्रेस जैसे दलों के साथ मिलकर राजनीति करते हैं। इस पुस्तक को लिखने का उद्देश्य दलित शोषित समाज को और उसके कार्यकर्ताओं एवं नेताओं को दलित शोषित समाज में व्यापक स्तर पर विद्यमान पिट्ठू तत्वों के बारे में शिक्षित, जागृत और सावधान करना था। पुस्तक के प्रारंभ में चमचा/पिटठू की परिभाषा देते हुए काँशीराम कहते है,

"चमचा एक देशी शब्द है जो ऐसे व्यक्ति के लिए प्रयुक्त किया जाता है जो अपने आप क्रियाशील नहीं हो पाता है बल्कि उसे सक्रिय करने के लिए किसी अन्य व्यक्ति की आवश्यकता पड़ती है। वह अन्य व्यक्ति चमचे को सदैव अपने व्यक्तिगत उपयोग और हित में अथवा अपनी जाति की भलाई में इस्तेमाल करता है जो स्वयं चमचे की जाति के लिए हमेशा नुकसानदेह होता है।" (चमचा युग, पृष्ठ-80)

सवर्णों को चमचे की जरूरत क्यों पड़ती है, इस पर काँशीराम लिखते हैं, "कोई औजार, दलाल, पिछलग्गू अथवा चमचा इसलिए बनाया जाता है ताकि उससे सच्चे और वास्तविक संघर्षकर्ता का विरोध कराया जा सके। चमचों की माँग तभी होती है जब सामने सच्चा और वास्तविक संघर्षकर्ता मौजूद हो। जब किसी लड़ने वाले की ओर से किसी प्रकार की कोई लड़ाई न हो, संघर्ष न हो और कोई खतरा न हो तो चमचों की माँग भी नहीं रहती।"

संयुक्त निर्वाचन मंडल की व्यवस्था की तुलना में पूना पैक्ट के माध्यम से दोगुनी सीटें दलितों को दी गईं। काँशीराम के मुताबिक महात्मा गाँधी संयुक्त निर्वाचन मंडल के एक सच्चे और वास्तविक प्रतिनिधि के बदले में दो चमचे देने के लिए सहमत हो गए और इस तरह से 24 सितंबर 1932 के पूना पैक्ट के माध्यम से चमचा युग की शुरुआत हुई।

काँशीराम ने 'चमचा युग' के दुष्परिणामों से लोगों को आगाह किया है। काँशीराम ने साफ कहा है कि चमचों के माध्यम से समाज के वंचित तबके के स्वतंत्र आंदोलनों को कुचलने की कवायद की जाती है, जिससे कि उनके हकों की लड़ाई न लड़ी जा सके।

काँशीराम ने समय समय पर जिन पत्रिकाओं का संपादन किया उनमें 'अनटचेबल इंडिया' (अंग्रेजी), 'बामसेफ बुलेटिन' (अंग्रेजी), 'आप्रेस्ड इंडियन' (अंग्रेजी), 'बहुजन संगठनक' (हिन्दी), 'बहुजन नायक' (मराठी एवं बांग्ला), 'श्रमिक साहित्य', 'शोषित साहित्य', 'दलित आर्थिक उत्थान', 'इकोनॉमिक अपसर्ज' (अंग्रेजी), 'बहुजन टाइम्स' दैनिक, 'बहुजन एकता' आदि प्रमुख हैं।

उनकी एक पुस्तक 'बर्थ ऑफ़ बामसेफ' शीर्षक से भी प्रकाशित है। काँशीराम के भाषणों को एक किताब के रूप में अनुज कुमार द्वारा संकलित किया गया है, इसका नाम है; "बहुजन नायक काँशीराम के अविस्मरणीय भाषण"। इसके अलावा 'राइटिंग एंड स्पीचेज ऑफ काँशीराम' को एस.एस. गौतम ने संकलित किया है.

काँशीराम के सम्मान में कुछ पुरस्कार भी दिये जाते हैं। इन पुरस्कारों में काँशीराम अंतर्राष्ट्रीय खेल-कूद पुरस्कार (10 लाख), काँशीराम कला-रत्न पुरस्कार (5 लाख) और काँशीराम भाषा-रत्न सम्मान (2.5 लाख) शामिल हैं।

संपर्क – 9433009898

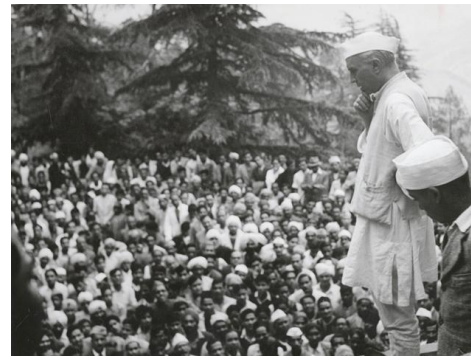

आजादी का अर्थ

जिस गांव में किसी को चमार कहते हैं वह गांव आज़ाद नहीं है
जवाहर लाल नेहरू

आज़ादी खाली सियासी आजादी नहीं, खाली राजनीतिक आगे आज़ादी नहीं, स्वराज्य और आज़ादी के माने और भी हैं. सामाजिक और आर्थिक हैं. अगर देश में कहीं गरीबी है, तो वहां तक आज़ादी नहीं पहुंची. यानी उनको आज़ादी नहीं मिली. जिससे वे ग़रीबी के फंदे में फंसे हैं, जो लोग फंदे में होते हैं, उनके लिए मानो स्वराज्य नहीं होता. वैसे वे ग़रीबी के फंदे में हैं। जो लोग गरीबी और दरिद्रता के शिकार हैं, वे पूरी तौर से आज़ाद नहीं हुए, उनको आजाद करना है। इसी तरह अगर हम आपस के झगड़ों में फंसे हुए हैं, आपस में बैर है, बीच में दीवारें हैं, हम एक-दूसरे से मिलकर नहीं रहते, तब भी हम पूरे तौर से आज़ाद नहीं हैं।

....जो एक-दूसरे के खिलाफ हमें जोश चढ़ता है, उससे ज़ाहिर होता है कि हमारे दिल और दिमाग पूरी तौर से आज़ाद नहीं हुए हैं, चाहे ऊपर से नक्शा कितना ही बदल जाए। इसी तरह की कई बातों से हमारी तंगख्याली ज़ाहिर होती है। अगर हिंदुस्तान के किसी गांव में किसी हिदुस्तानी को, चाहे वह किसी भी जाति का है, या अगर उसको हम चमार कहें, हरिजन कहें, अगर उसको खाने-पीने में, रहने-चलने में वहां कोई रुकावट है, तो वह गांव कभी आज़ादी नहीं है, गिरा हुआ है।

हमें इस देश के एक-एक आदमी को आजाद करना है, देश की आज़ादी, आम लोगों के रहन-सहन, आम लोगों को तरक्की का, बढ़ने का मौका मिलता है, आम लोगों को क्या, पूरी तकलीफ और क्या आराम है, इन बातों से देखी जाती है। तो हम अभी आजादी के रास्ते पर हैं, यह न समझिए कि मंजिल पूरी हो गई। और वह मंज़िल एक जिंदादिल देश के लिए जो आगे बढ़ती जाती है कभी पूरी नहीं हुई।

1954 में लाल किले से...

सामाजिक व राजनीतिक समानता के लिए आरक्षण जरुरी

प्रियंका भारती

शिक्षा, रोजगार में आर्थिक सहायता सामाजिक व राजनीतिक समानता का पहला चरण

आरक्षण भारतीय संविधान द्वारा प्रदत्त एक सामाजिक व्यवस्था है। जिसका उद्देश्य देश को एकता व अखण्डता के रूप में एकीकृत करना है, पर समाज के कुछ लोगों ने अपने निजी स्वार्थ के चलते आरक्षण पर डा .बी.आर. अम्बेडकर की महान सोच को संकुचित तरीके से प्रतिबिंबित कर दिया है। आरक्षण का उद्देश्य कभी भी किसी वर्ग विशेष को आर्थिक लाभ पहुंचाना नहीं था बल्कि सभी वंचित वर्गों मसलन, अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, अन्य पिछड़ा वर्ग, अल्पसंख्यक, महिलाएं, बच्चों को सामाजिक व राजनीतिक समानता प्रदान करने का एक सार्थक प्रयास था। समानता की पहली सीढ़ी के रूप में आर्थिक लाभ इसलिए दिया जाना ज़रूरी है कि वंचित वर्ग के सभी लोग अच्छी शिक्षा व स्वास्थ्य प्राप्त कर एक सशक्त समाज के निर्माण में अपनी भूमिका सुनिश्चित कर सकें। परन्तु आज भी आरक्षण की संवैधानिक व्यवस्था अपने उद्देश्य को पूरा करने में बौनी सी मालूम पड़ती है।

अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, पिछड़ी जाति, अल्पसंख्यकों के साथ जाति व धर्म के आधार पर भेदभाव किए जाने के तमाम मामले विधिक संस्थानों में दर्ज किए जाते हैं। दबे मन से या समाज की गरिमा को बनाए रखने के लिए तथाकथित संभ्रांत लोग आरक्षित समुदाय से सदाचार का दिखावा करते हैं पर व्यक्तिगत व्यवहार में उनसे बहुत परहेज करते हैं। घर से लेकर बाहर तक महिलाओं को समान अवसर की बात पुरजोर तरीके से की तो जाती है पर परिवार के रूप में स्थापित सबसे छोटी सामाजिक इकाई में व्यक्तिगत रूप से

शारीरिक, मानसिक पीड़ा देकर उन्हें पितृसत्ता या इसका प्रतिनिधित्व करने वाली महिला सदस्य द्वारा प्रताड़ित कर खुद पर निर्भर बनाने का प्रयास किया जाता है। भारतीय संविधान का स्वतंत्र अनुच्छेद 21A यह सुनिश्चित करता है कि 14 साल तक के सभी बच्चे नि:शुल्क शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं, पर व्यवहार में यह अपेक्षाकृत ना के बराबर ही है। प्राइवेट स्कूल में पढ़ने वाले नौनिहाल की ट्यूशन फीस माफ होती है, मीड डे मिल के नाम पर कुछ धनराशि भी खाते में आती है पर, स्कूल ड्रेस और प्राइवेट स्कूल का डेकोरम मेंटेन करने के लिए अभिभावक ठीक-ठाक फीस चुकाते हैं। इसके विपरीत दूसरी ओर देखा जाए तो छोटे-बड़े शहरों के चमचमाते हाईवे के किनारे ढाबा, टी-स्टाल, जूस स्टाल पर एक नाबालिग जिसे अभी किसी स्कूल की क्लास को शुशोभित करना चाहिए था, वह अनगिनत अंजान लोगों से छोटू की उपाधि से नवाजा जा चुका है।

अपने तमाम अनुभवों को एकजुट करने का प्रयास करूं तो कुछ जमा यही समझ पाती हूं कि बाबा साहेब डॉ. अम्बेडकर की महान सोच को चंद पढ़े लिखे लोगों ने अपने निजी स्वार्थ के लिए बहुत छोटे आयाम में समेट दिया है और इन पढ़े लिखे सभ्य लोगों में मैं भी हूं, आप भी हो, वंचित वर्ग के ठेकेदार, तथाकथित उच्च वर्ग भी है जो आरक्षण को सिर्फ आर्थिक दायरे तक ही समझकर बौनी समझ का उदाहरण दे रहे हैं। आरक्षण का पहला सिद्धांत सामाजिक व राजनीतिक समानता है, और रोजगार, छात्रवृत्ति के रूप में मिलने वाला आर्थिक आरक्षण मात्र एक माध्यम है उस पहले सिद्धांत तक पहुंचने के लिए। क्या हम सभी एकजुट होकर ऐसे समाज की स्थापना नहीं कर सकते कि जहां जाति, धर्म से परे हम सभी के सर्वांगीण सामाजिक, राजनीतिक आर्थिक विकास के लिए नए विचारों का स्वागत किया जा सके, उन पर सार्थक चर्चा कर सामूहिक रूप से उन विचारों को क्रियान्वित करने का प्रयास किया जा सके? इस प्रयास में यदि हमारा एक विचार भी सार्थक हो पाया उस समाज के किसी भी व्यक्ति को लाभ मिल पाया तो हमारा यह प्रयास एक सशक्त व मजबूत समाज स्थापित करने में सार्थक सिद्ध होगा और समाज के प्रति हमारी भागीदारी सुनिश्चित करेगा।

संपर्क - 9729039464

भीड़

एस. एस. पंवार

1.
भीड़ ने कहा मारो-मारो-मारो...
आदमी मार दिया गया,
आदमी चिल्लाता रहा बार-बार
मैं मुस्लिम नहीं हूँ- मैं मुस्लिम नहीं हूँ-
मुझे छोड़ दो... प्लीज। मुझे मत मारो-मत मारो मुझे
भीड़ को कहाँ सुनाई देते हैं ऐसे शब्द
भीड़ का अपना कोई धर्म थोड़े ही होता है

2.
भीड़ बढ़ रही है सरेराह
रास्ते बिछ गए हैं खूनों से, लाशों से
खूनी गन्ध से भर गई है गलियाँ,
लाशों के गले में भगवा साफे हैं और कपड़ों पर खून के धब्बे
भीड़ बढ़ रही है मुसलसल
भीड़ ने भी पहन रखे हैं गले में भगवा साफे

3.
मरने के बाद आदमी की लाश ने पूछा
आखिर क्या कसूर था मेरा? क्यों मारा मुझे?
घर में मेरी पत्नी है, माँ है, बच्चे हैं
वे सब अकेले हो गए हैं। क्या बिगाड़ा था उन्होंने तुम्हारा?
भीड़ बोली-
किसी को मारने के लिए
उसका कसूर देखना जरूरी थोड़े ही है!

संपर्क – 9017738638

ईशम सिंह की कविताएं

सर्विस बुक

3 बजकर पैंतीस मिनट्स पर
घंटी बजते ही
हम इकट्ठा हो जाते थे
चाय के लिए
स्टाफ़ रूम में

जिसको जो कप मिला
उठाया धोया और
चाय डालकर पीनी शुरू..
स्नैक्स में भी वही उलझन
जिसके हाथ में मिला
छीन लिया...

हूबहू
लंच करना...
एक दिन विद्यालय प्रमुख का आदेश आया
सर्विस बुक चेक करने की अनुमति मिली
उसमें लिखी थी
मेरी सबसे ख़ास निशानी
ठीक उसी निशानी की तरह
जिसको पहचान लिया था भगवान राम ने
सिया माता की दी अँगूठी...

उन्होंने भी पकड़ ली
मेरी जात
सर्विस बुक ने मुझसे
मेरी पहचान छीन कर

एक नई पहचान दी
कम अंक वाला
कोटा से आया हुआ
ख़ैरात खाया हुआ
शेड्यूल कास्ट।

मां का सन्दूक

मां के संदूक की
लोहे की पत्तियां
हाथ काटने लगीं हैं
उलझ जाती है अंदर पड़े
कपड़ों में ही
रद्दी में पड़ी दरी
बिछौने, कांसी के बर्तन।
कपूर की गोलियां
अब बेअसर हो गई है
मग़र असरकारक है
एक कोने में पड़ी बही
आज भी जिंदा हैं
उसमें लगें हैं अंगूठे
मेरे पिताजी के
एक के बाद एक
उसी अनुपात में जिस अनुपात में
आढ़ती के सिग्नेचर हैं।
मेरे पिताजी बेशक न रहे
मगर रह गए हैं
बही में लगे अंगूठे
देनदारी के।

संपर्क 94676 38862

एक परदेशी का आखिरी प्रेम सन्देश
कपिल भारद्वाज

प्रिय कांटो
मेरे मन का मृग शावक
शाम होते ही/ कलकलाने लगता है
विचलित हो जाता है
भंवर जाल में फंसा/ विवश अनुभव करता है।

समय का आर्त्तनाद/ जाने किस पहिये से लिपटा
अनजान दिशाओं में जूझ रहा है
हाशिये पर रखे वर्तमान को।

तुम्हारा शहर गन्दे नाले से शुरू होता था
भिखारियों और मक्खियों की भिन्नभिन्नाहट
कूड़े के ढेरों पर मगजमारी करते बेसहारा बच्चे
तुम्हारे शहर की शोभा हैं या किसी तरक्की के पैमाने हैं
जो इन धनपशुओं ने हमें उपहार में दिए हैं।

कोने पर खड़ा एक नीम का पेड़
जिसके नीचे तुमने मेरे होठों पर चुम्बन दिया था
बड़ा कसैला स्वाद था, कच्ची निम्बोली जैसा
लेकिन इतिहास में दर्ज है वो नीम....
जब एक देश के दो देश हो रहे हों
तो स्त्रियों को चुकानी होती है सबसे ज्यादा कीमत।

अपने ही देश में परदेशी हो जाना
वही जान सकता है इसका दर्द
जो धरती से चूल्हे बनाना जानता हो।

हम मछलियों जैसे थे.... धार में बहती
और बगुले हमारे सिरों पर मंडरा रहे थे
मैंने उन बगुलों को कई बार देखा/ लेकिन
तुमने जानबूझकर आंखों पर तीन उंगलियां टिका दी थी
बगुलों से खास लगाव बहुत बाद में समझ सका मैं।

किसी देवता से शापित होना
निराश ही नहीं करता बल्कि जीवन के रस को भी सोख लेता है

संपर्क - 9068286267

इस समय
राजेश भारती

इसी समय ही
कुछ मजबूर
औरतें कर रही होंगी
विवश होकर
अपनी देह का सौदा
इसी समय ही
कुछ अभागे बच्चे
बेच रहे होंगे ग़ुब्बारे
सड़क के किनारे
और इसी समय ही
शिक्षा के बजट को बढ़ाकर दोगुना कर दिया गया होगा
और सांसदों के वेतन भत्तों में चौगुनी वृद्धि हो गई होगी
इसी समय ही
मेरी आत्महत्या की ख़बरें फैलाई जा रही होंगी
लेकिन मुझे मारा गया है
मैंने मानवता पर कविताएं लिखी
मैंने प्रेम पर कविताएं लिखी मैंने तितलियों पर कविताएं लिखी
लेकिन मेरा क़त्ल इसलिए किया गया

कि मैंने इंक़लाब के लिए कविताएं लिखी

इसी समय ही
एक आदमी जो एक ख़ूबसूरत दुनिया का स्वप्न देख रहा होगा
ऐसी दुनिया
जहां शांति के झरने बह रहे होंगे
अफ़्सोस वह आदमी इसी समय एक बम हमले में मारा जा चुका होगा

इसी समय ही कुछ सिरफिरे लोग
भर रहे होंगे बंदूकों में गोलियाँ
और कुछ बच्चे दे रहे होंगे पौधों को पानी
इसी समय ही
सारी दुनिया सहमी होगी युद्ध के साए में
और इसी समय ही एक प्रेमी अपनी प्रेयसी के बालों में फूल टाँक रहा होगा
और इसी समय ही
एक बच्चा अपनी मां की गोद में सबसे सुरक्षित होगा।
ईश्वर सबका भला करें

इसी समय ही
एक मुस्कुराते हुए बच्चे की निश्चल मुस्कान में ढूंढ लिया होगा
किसी ने मुस्कुराता हुआ ईश्वर
और इसी समय ही कोई सिरफिरा, बनकर मानव बम बैठने जा रहा होगा
बच्चों से भरी स्कूल बस में जन्नत पाने के लिए

इसी समय ही
कुछ बच्चे
जो बिलबिला रहे होंगे भूख से
बीमार लाचार समाने को होंगे
मृत्यु की गोद में
कौन पढ़ पाएगा उनकी
भूख में सूखी अंतड़ियों का सुसाइड नोट

और इसी समय ही कुछ कुत्ते बैठे सोफों पर खा रहे होंगे ब्रांडेड फूड
और कर रहे होंगे
गोश्त दिए जाने की प्रतीक्षा

इसी समय ही
बकरियों का मिमियाना क़साई के आने की सूचना देता है
और इसी समय ही
एक सुनसान रास्ते पर एक लड़की की लाश मिली होगी बताने वाले बताते होंगे
यह वही लड़की है जिसने पिछले महीने घर से भाग कर शादी की थी

इसी समय ही
एक मां अपनी बच्ची को सुना रही होगी
युद्ध की कहानी
युद्ध जो लड़ा गया
ज़मीन की ख़ातिर
संपूर्ण विश्व पर अपना आधिपत्य स्थापित करने की लालसा लिए
युद्ध जो लड़ा गया सोना- चांदी, तेल के भंडारों को लूटने के लिए
औरतें भी नहीं बच पाई लुटने से
किंतु अफ़सोस
कोई एक भी युद्ध
क्यों नहीं लड़ा गया
प्रेम के लिए।

संपर्क - 9896992737

भारत और उसके विरोधाभास

गौरव

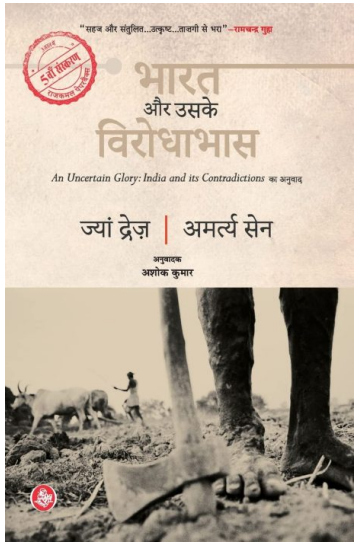

भारत और उसके विरोधाभास पुस्तक का शीर्षक ही प्रभावी है। सामान्य मनुष्य जो प्रतिदिन इन विरोधाभास से संघर्ष करता है, वह शायद इन विरोधाभास के सम्बन्ध में निजी तौर पर बातचीत भी करता है किन्तु वह सार्वजनिक तौर पर इन सवालों पर विस्तार से बातचीत नहीं करता है। जब हम भारत के विरोधाभास की पहचान करें तो यह कोई यह कोई नया विचार नहीं बल्कि हमारे आस-पास के ही केन्द्रीय मुद्दे है जिनपर प्राय: ही विस्तरित चर्चा होती है। जैसे:- शिक्षा, स्वास्थ्य, भूखमरी, गरीबी, जातीय संरचना, सामाजिक संरचना। यह पुस्तक आर्थिक दृष्टिकोण को केंद्र में रखकर लिखी गई लेखक ने विभिन्न सर्वेक्षणों व डाटा के माध्यम से मुद्दों को काफी स्पष्ट ढंग से उठाया है।

बहराल पुस्तक ज्यां द्रेज व अमर्त्य सेन के साझा संघर्ष व विस्तरित शोध का परिणाम है। दोनो ही विद्वान अर्थशास्त्र विषय से संबंधित है। निरंतर अर्थव्यवस्था सम्बन्धी विभिन्न सवालों को उठाते हैं। वर्तमान का विश्लेषण भी काफी विस्तृत फलक पर किया है जैसे भारत में वो कौन सी केंद्रीय समस्याएँ हैं जिनकी वजह से विकास की गति प्रभावित हुई है या हो रही है। मौजूदा दौर मे अगर हम अर्थव्यवस्था की बात करें तो वह विश्व स्तर पर काफी वृद्धि कर रही है। जिसका गुणगान भी प्रचुर मात्रा में हो रहा है वहीं अगर हम प्रति व्यक्ति आय की ओर नजर करते है तो उसमें कुछ खास वृद्धि नहीं दिखाई पड़ती। विश्व स्तर के साथ यदि यह

वृद्धि प्रति व्यक्ति के स्तर पर भी हो तो तब हम इस वृद्धि को सही मायने मे वृद्धि मान सकते है क्योंकि सवाल यही है वृद्धि उच्च स्तर पर निचले स्तर पर भी जरुरी है।

जाति व जातीय संरचना भी विकास की गति को प्रभावित करते हुए गति को धीमा करती है। लेखक ने लोहिया के दृष्टिकोण को संदर्भित करते हुए जाति व जातीय संरचना को व्याख्यित किया है "जाति अवसरों को बाधित करती है। अवसरों के बाधित होने से ही क्षमता बाधित होती है। क्षमता बाधित होने से अवसर और ज्यादा सीमित होते हैं। जहाँ जाति हावी होती है वहाँ अवसर और क्षमता चंद लोगों के दायरे में सीमित हो जाते है। यह प्रश्न सदियों से बना हुआ है कि जाति की संरचना ने विभिन्न प्रतिभाओं को नष्ट किया है। यदि जनसंख्या के हिसाब से अवसरों का सीमित होना आँका जाए तो शायद वह वह और भी चिंताजनक होगा।

आर्थिक वृद्धि और जीवन इन दोनों को हम अलग करके नहीं देख सकते। ये दोनों ही एक नदी के दो छोर हैं जैसे ही आर्थिक वृद्धि की गति चलयामान होती है वैसे ही जीवन शैली में भी परिवर्तन होता है। या यूँ कहें कि जीवन में सुगमता आती है लेकिन इसमें उपलब्धियों की महत्वपूर्ण भूमिका है कि हमने क्या प्राप्त किया है व क्या छोड़ दिया है। भारत के विभिन्न राज्यों व विश्व स्तरीय स्तर पर अनेकों विरोधाभास है जिनको लेखक ने भारत के संदर्भ में तुलनात्मक तरीकें से विश्लेषित किया है। स्वच्छता से जुड़ा सवाल अति जरुरी है जिसमें भारत की स्थिति काफी चिंताजनक दिखाई पड़ती है। प्रस्तुत रिपोर्ट के आधार पर अगर हम भारत और बंगलादेश की तुलना करें तो बंगलादेश जैसे गरीब देश ने स्वच्छता जैसे कार्यक्रम मे बहुत आगे तक कदम बढ़ाया है। भारत में आज भी खुले मे शौच जाने वाला की आबादी 50% है। लोगों के घरों में स्वास्थ्य की सुविधा नहीं है। इससे सबसे ज्यादा महिलाओं को समस्या होती है क्योंकि या तो वे रात को शौच जाती है या फिर सुबह भौर में जो की उनकी सुरक्षा के लिहाज से महत्वपूर्ण प्रश्न है।

स्वास्थ्य पुस्तक का केंद्रीय विषय रहा है। भारत की स्वास्थ्य सुविधाओं की तरफ भी ध्यान जाना आवश्यक है। सबसे पहले तो जनसंख्या का प्रश्न महत्वपूर्ण हो जाता है। भारत में जनसंख्या का अनुपात बहुत ज्यादा है। अगर देखा जाए तो चीन में भी जनसंख्या भारत के समान ही दिखाई पड़ती है पंरतु यहाँ तुलना का विषय यह हो जाता है कि भारत में डाक्टर और मरीजों का अनुपात समान नहीं दिखाई देता। हालांकि स्वास्थ्य सुविधाओं में पहले से परिवर्तन तो हुआ है किन्तु स्थिति उसके बाद भी चिंताजनक ही है। यहाँ अंतर भारत और चीन में यह देखने को मिलता है कि चीन अपने सकल घेरलू उत्पाद का अच्छा खासा हिस्सा स्वास्थ्य सुविधाओं पर खर्च करता है। वहीं भारत में यह हिस्सा जनसंख्या के हिसाब से काफी कम दिखाई पड़ता है।

स्वास्थ्य सुविधाओं में अक्सर निजी बीमा कंपनियों के बढ़ते चलन से भी काफी समस्या उत्पन्न हुई है। लोग सावर्जनिक सुविधाओं के अभाव में निजी सुविधाओं की ओर अग्रसर हुए हैं। जिससे लूटपाट का सिलसिला बढ़ता गया। दूसरा लोग दवाईयों के बारे में कम जानकारी रखते हैं। 10 रुपये की लागत वाली दवाई 300 रुपये में मिलती है। निजी स्वास्थ्य बीमा कंपनियों का सही तरीके से कार्य ना करना भी स्वास्थय संबंधित मामलों की एक तरह से अनदेखी ही है।

शिक्षा से ही सभी समस्याओं का हल किया जा सकता है। यदि किसी व्यक्ति को अच्छी व सुगम्य शिक्षा मिले तो वह जरुर परिवर्तनकारी साबित होती है। शिक्षा के द्वारा ही मनुष्य जीवन जीने के संसाधन उत्पन्न करता है। लेकिन भारत में शिक्षा से संबंधित स्थिति भी गर्व करने लायक नहीं है। लेखक यू.पी. राज्य की विस्तृत रिपोर्ट के माध्यम से बताता है कि स्कूलों में मूलभूत सुविधाओं की बात तो दूर लेकिन शिक्षा ही सुचारु रुप से नहीं दी जाती। स्कूलों में शिक्षक नहीं हैं। शिक्षक व विद्यार्थियों का अनुपात भी सही नहीं है। कई स्कूलों में तो पीने के पानी या शौचालय जैसी मूलभूत व्यवस्थाएं भी नहीं हैं।

ये सभी विषय सार्वजनिक विषय हैं, हम इन विषय पर अपना निजी विचार रखते है या फिर दूसरी संभवानाओं की ओर रुख कर लेते हैं। जब तक ये सभी समस्याएँ सार्वजनिक विमर्शों में नहीं आएंगी तब तक इनमें सुधार की गुजाइंश नहीं देखी जा सकती।

संपर्क - 9518469015

स्टीफन हॉकिंग को याद करते हुए

सुनील कुमार

"हम एक बहुत ही औसत तारे के एक मामूली ग्रह पर बंदरों की एक उन्नत नस्ल हैं. लेकिन हम ब्रह्मांड को समझ सकते हैं. यह हमें कुछ बहुत खास बनाता है।" – स्टीफन हॉकिंग

दुनिया के रहस्यों पर से पर्दा उठाने वाले अद्वितीय उद्बोधक महान वैज्ञानिक स्टीफन हॉकिंग को हाल ही में उनकी पुण्यतिथि पर दुनिया भर में याद किया गया। स्टीफन हॉकिंग एक विश्व प्रसिद्ध भौतिक विज्ञानी, ब्रह्माण्ड विज्ञानी, लेखक और कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय में सैद्धांतिक ब्रह्मांड विज्ञान केन्द्र के शोध निर्देशक थे। इनका जन्म 8 जनवरी 1942 को ब्रिटेन के ऑक्सफोर्ड नगर में हुआ। हॉकिंग का जन्म चिकित्सकों के एक परिवार में हुआ था। अक्टूबर 1959 में, 17 साल की उम्र में, उन्होंने यूनिवर्सिटी कॉलेज, ऑक्सफ़ोर्ड में अपनी विश्वविद्यालय की शिक्षा शुरू की। जहाँ उन्होंने भौतिकी में प्रथम श्रेणी बीए की डिग्री प्राप्त की। साल 1962 में, उन्होंने ट्रिनिटी हॉल, कैम्ब्रिज में अपना स्नातक कार्य शुरू किया। जहां 1966 में, उन्होंने सामान्य सापेक्षता और ब्रह्मांड विज्ञान में विशेषज्ञता के साथ व्यावहारिक गणित और सैद्धांतिक भौतिकी में पीएचडी की डिग्री प्राप्त की। सन 1963 में मात्र 21 साल की उम्र में हॉकिंग को मोटर न्यूरॉन बीमारी के शुरुआती दौर में धीमी गति से बढ़ने वाली बीमारी का पता चला, जिसने धीरे-धीरे, दशकों तक उन्हें विकलांग बना दिया। स्टीफन हॉकिंग को मोटर न्यूरोन नाम की बीमारी से हार नहीं मानी व जिजीविषा के साथ इससे ताउम्र लड़ते रहे। हालांकि इसमें शरीर के अधिकतर अंग काम करना बंद कर देते हैं। इस बीमारी से चलने-फिरने के साथ बोलने से भी लाचार हो गये थे। लेकिन स्टीफन की

व्हील चेयर कुछ इस तरह बनी थी कि वो उनके बोलने को समझ लेती थी। वह जो चाहते थे, वो लिखती भी थी। दूसरों से संपर्क भी साधती थी। इस व्हील चेयर को वो कार की तरह चला सकते थे। स्टीफन हॉकिंग ने अपने लिए खासतौर पर बनाई गई इस कस्टम इलेक्ट्रिक व्हीलचेयर का इस्तेमाल 1980 से शुरू किया. धीरे धीरे उनकी व्हीलचेयर से तमाम तकनीक जुड़ती गईं. जो हाई-टेक, कंप्यूटर जेनरेटेड थी. इसी के सहारे वो दुनियाभर से जुड़े भी रहते थे और अपने सारे काम भी कर लेते थे। अतः कहा जा सकता है कि ये दुनिया की सबसे स्मार्ट व्हील चेयर से परिपूर्ण थे। हाकिंग की व्हीलचेयर में ऐसे इक्विपमेंट्स थे, जिनके जरिए वे विज्ञान के अनसुलझे रहस्यों के बारे में दुनिया को बताते थे. चेयर के साथ कम्प्यूटर और स्पीच सिंथेसाइजर लगा था, इसी के सहारे हाकिंग पूरी दुनिया से बातें करते थे। ये उनके इशारों और जबड़े के मूवमेंट को आवाज में बदलती थी।

स्टीफन हॉकिंग ने ब्लैक होल और बिग बैंग सिद्धांत को समझने में अहम योगदान दिया। उन्हें 12 मानद डिग्रियाँ और अमेरिका का सबसे उच्च नागरिक सम्मान प्राप्त हुये।स्टीफ़न हॉकिंग की पुस्तक-रूप में प्रकाशित कृति है 'समय का संक्षिप्त इतिहास'। यह पुस्तक सन् 1988 में प्रकाशित हुई थी और अपनी तथ्यपरकता एवं वैज्ञानिकता के कारण इतनी लोकप्रिय हुई कि 10 वर्षों में इसकी दस लाख प्रतियाँ बिक गयीं। आज भी उसकी माँग बनी हुई है। उन्होंने अपनी किताब में लिखा है "मुझे सबसे ज्यादा खुशी इस बात की है कि मैंने ब्रह्माण्ड को समझने में अपनी भूमिका निभाई। इसके रहस्य लोगों के सामने खोले और इस पर किये गये शोध में अपना योगदान दे पाया। मुझे गर्व होता है जब लोगों की भीड़ मेरे काम को जानना चाहती है। वे अपनी वैज्ञानिक व तार्किक दृष्टि के आधार पर बताया कि ना कोई ईश्वर है, ना स्वर्ग-नर्क और ना किस्मत जैसी कोई चीज़ है.।यह विचार विश्व के महान वैज्ञानिक स्टीफन हॉकिंग के जो उन्होंने अपनी अंतिम पुस्तक ब्रीफ अनश्वर टू दी बिग क्वेशन ' में दिए हैं.। यह पुस्तक स्टीफन हॉकिंग की मृत्यु के बाद उनके परिवार ने प्रकाशित करवाई है। हॉकिंग का 76 वर्ष की आयु में 14 मार्च 2018 को कैम्ब्रिज में उनके घर पर निधन हो गया। विज्ञान, मनोरंजन, राजनीति और अन्य क्षेत्रों की हस्तियों ने उनके दुनिया के लिए योगदान की प्रशंसा की। उनकी मृत्यु पर] गोनविले और कैयस कॉलेज का झंडा आधा झुका हुआ था और छात्रों और आगंतुकों द्वारा संवेदना की एक पुस्तक पर हस्ताक्षर किए गए थे। दक्षिण कोरिया के प्योंगचांग में 2018 पैरालंपिक शीतकालीन खेलों के समापन समारोह में आईपीसी अध्यक्ष एंड्रयू पार्सन्स के समापन भाषण में हॉकिंग को श्रद्धांजलि दी गई। उनका शारीरिक अंतिम संस्कार 31 मार्च 2018, को ग्रेट सेंट मैरी चर्च कैम्ब्रिज में हुआ।

संपर्क - 9467567507

धनपत सिंह

(जिला रोहतक के गांव निंदाणा में सन् 1912 में जन्म। जमुआ मीर के शिष्य। तीस से अधिक सांगों की रचना व हरियाणा व अन्य प्रदेशों में प्रस्तुति। जानी चोर, हीर रांझा, हीरामल जमाल, लीलो चमन, बादल बागी, अमर सिंह राठौर, जंगल की राणी,रूप बसंत, गोपीचन्द, नल-दमयन्ती, विशेष तौर पर चर्चित। 29जनवरी,1979 को देहावसान।)

इसाए जी हो गरीब्बां जो अन्न पाणी वो दास
इसीए हो सै भूख जयसिंह इसी ए होया कर प्यास

सांप के पिलाणे तैं भाई बणै दूध का जहर
प्यार मोहब्बत असनाई चाहिये बराबरीयां तैं बैर
चाए रोवो चाए गिड़गिड़ाओ कोई, तुम अपणी मांगे जा खैर
लूट, खसोट तबाह कर दे इसा तोल दिया कहर
तूं दो दिन म्हं दुख पाग्या हम दुख पावैं बारहा मास

कोए भूक्खा रह्वै अर दिन रात कमाए जा
तूं फळी तक ना फोड़ै माल हरामी खाए जा
कोए माट्टी गेल्यां माट्टी हो तूं छाड़ बर नहाया जा
किसै नैं खाट भी नहीं मिलती तूं तकिए लाए जा
किसे की झुपड़ी भी फुक्की जा, तेरा बंगल्यां म्हं बास

गरीबों ऊपर ठाड्यां का कोए ताण ना चाहिये
करै दिन रात घुळाई दुखी किसान ना चाहिये
जो पुगण में ना आवै इसा लगान ना चाहिये
तूं पांच की वसूली म्हं करता है पचास

हिम्मत एक तो तूं जाईए, दो-चार और जाओ
असला भी लो साथ म्हं और हथियार भी ठाओ
इतणै आंख्यां पर तै पट्टी खोल्लण ना पाओ
जब तक इस जंगल तै बाहरणे छोड़ ना आओ
कहै धनपत सिंह इसनैं जी तैं मार द्यूं जै फेर बणैं बदमाश

लोकधारा

गुग्गा पीर की छड़ी, दादी कूद के पड़ी

सोनिया सत्या नीता

भादव के शुरू होते ही डेरू बजने की परम्परा भी जीवंत होती है। गांव देहात में भादव के आने पर डेरू वाले एकम से लेकर नवमी तक डेरू बजाते हुए फेरी लगाते हैं। डेरू वो साज है जिसको हम केवल भादव में ही सुनते हैं, एक तो ये बजाना बड़ा कठिन है और सीखना तो उससे भी कठिन। ढूं ढूं ढूं की ध्वनि के साथ गुग्गा महिमा गाते डेरू बजाने वालों को "सवैये" कहा जाता है।

गुग्गा नवमी के दिन कहते हैं कि सर्दी इस दिन जन्म लेती है और गर्मी जाने का संदेश देती है। "जाड़े का ड़ाँडा" इसी दिन गाड़ा जाता है और इसी आधार पर पहले समय धान, बाड़ी की, बाजरा की फसल के लाभ और हानि को नापा जाता था। गुग्गा नवमी के दिन सुबह उठते ही तवे की कालिख या गेरू से गुग्गा पीर और उनके नीले घोड़े का चित्र दीवार पर बनाया जाता है। इसके बाद गुड़, चीनी और पतासे आस पड़ोस मे बांटे जाते हैं, इसे सिरणी कहा जाता है।

'ए सिरणी बाँट आओ ए, फेर यो प्रसाद पीर की छड़ी आल्या तै देणा सै' इस दिन घर की बड़ी महिला द्वारा पुड़े, गुड़ के चावल खीर और हलवे का भोग गुग्गा पीर के बनाए चित्र के सामने अंगारी (जलती आग) पर दिया जाता है.

शाम के वक्त डेरू बजाने वाले पीर की छड़ी सजाते हैं और पूरे गाँव मे परिक्रमा करते हैं। खास तौर पर ये भजन गाया जाता है....

रँग सै हो रँग सै
हो गुरु गोरख नै रँग सै
रँग सै हो रँग सै
हो माता बाछल नै रँग सै
रँग सै हो रँग सै
हो म्हारै बागड़ म्ह रँग सै हो…..
हो रँग सै हो रँग सै
हो फकीर गुगा मेड़ी म्ह रँग सै हो….
हो रँग सै हो रँग सै
हो…लीले घोड़े नै रंग सै हो…

लाग्या हुमाया हो ..
गोरख का चेला लाग्या हुमाया हो आ लिया..

गुरु गोरख का जाया हो
गुग्गा राणा लाग्या हुमाया हो आ लिया..
दादा अमर का बीर हुमाया हो आ लिया..
हो माता बाछल का जाया
हे गुगा राणा लाग्या हुमाया आ लिया….
लाग्या हुमाया हो गोरख का चेला लाग्या हुमाया हो..
हो लीले रै घोड़े का चाव हो..
मार दरवाजे के पाँ (पैर) हो
पीर मन्ने लाग्या हुमाया हो..
लाग्या ऍ सवैये का चाव
हे पीर मन्ने लाग्या हुमाया हो ..

जाहरवीर गुगा पीर को गोगा पीर भी कहा जाता है। नवमी को "ददरेवा" मे और गुग्गा मेड़ी मे खूब भीड़ देखी जाती है। डेरू की धुन के साथ सवैये "छबील" भी खुद को मारते हुए, मोर के चंदे (मोरपंख) के मोटे गाँठे से खुद में गुग्गा पीर का आभास करते हैं और लोगों को आशीर्वाद देते हैं। लोहे की इतनी मोटी चाबुक से मारने के बाद भी ये सवैये चोट या थकान को महसूस नहीं करते। गुग्गा पीर की छड़ी उठाते वक्त महिलाएं शामिल नहीं होती। इस छड़ी पर महिलाएं चुनरी, दुप्पटे और नीली चादर बांधती हुई सवैयों को प्रसाद, गेंहू और दक्षिणा देती हैं।

"गुग्गा पीर की छड़ी, दादी कूद के पड़ी"

बचपन में इन पंक्तियों के गायन में अलग ही उल्लास था। अब गुग्गा नवमी महज नवमी बनकर रह गयी है। बिल्कुल एक आम दिन की तरह ही मन्नतों को मांगते हुए गुग्गा मेड़ी से लेकर गांव की पीर की छड़ी तक महिलाओं में बहुत से भाव देखने को मिलते हैं। पूरे गाँव के दादा खेड़ा, मन्दिर और शिवालयों की दर्शन के बाद पीर की छड़ी को सवैये घर ले जाते हैं। कई सवैये इस पीर की छड़ी को गुग्गा मेड़ी तक लेकर जाते हैं। भादव महीने की ये नवमी मेरे लिए साल के सबसे खास दिनों मे से एक है। मॉडर्न लोग इसे अंधविश्वास या पाखंड कह सकते हैं पर मुझे डेरू के संगीत की धमक एक अलग दुनिया में जीने का मौका देती है।

लेखक सत्य और सौंदर्य का शहद बनाता है

अरुण कुमार कैहरबा

गांव ब्याना स्थित राजकीय मॉडल संस्कृति वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के प्रोफेसर डॉ. सुभाष सैनी ने बाल संगम भित्ति पत्रिका के दूसरे अंक का विमोचन किया। विमोचन में भित्ति पत्रिका के संपादक मंडल तनु, गुरमीत, संजना, रीतू, निशा, सृष्टि, सिमरण, तृषा, साक्षी, आरती, मनप्रीत, मानसी व साक्षी ने सहयोग किया। कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के प्राध्यापक विकास साल्यान ने भी शिरकत की। मंच संचालन स्कूल के हिन्दी प्राध्यापक अरुण कुमार कैहरबा ने किया। अंग्रेजी प्राध्यापक राजेश सैनी व हिन्दी अध्यापक नरेश मीत ने आए अतिथियों का स्वागत किया।

डॉ. सुभाष सैनी ने विद्यार्थियों को लेखन-क्या, क्यों और कैसे? विषय पर संबोधित करते हुए कहा कि लेखक मधुमक्खी की तरह जोकि विभिन्न स्थानों से अनुभवों का पराग लेकर सत्य और सौंदर्य का शहद बनाता है। मधुमक्खी द्वारा शहद बनाने की प्रक्रिया और मकड़ी द्वारा जाल बनाने की प्रक्रिया में अंतर है। उन्होंने कहा कि सुबह से शाम तक हमने क्या किया, ऐसे सब विवरणों को तरतीब से लिख लेना ही लेखन नहीं होता है। ना ही लेखन ठोस व स्थूल वस्तु का निर्माण करना है। लेखन नृत्य, अभिनय, मूर्ति कला, चित्रकला व अन्य कलाओं से भी अलग है। क्योंकि नृत्य व अभिनय में कलाकार का शरीर, मूर्ति में पत्थर व अन्य उपकरणों, चित्रकला में पेंसिल व रंगों का साथ मिलता है। लेकिन लेखन में लेखक को अपने बाहरी परिवेश के अनुभवों को मानसिक प्रक्रिया से सजाना-संवारना होता है और उसे कागज पर लिखना होता है। दुनिया में हर समय ही लेखक को सोचना पड़ता है। हर लेखक के सामने यही सवाल होता है कि वह क्या लिखे? उन्होंने कहा कि कोई भी व्यक्ति जन्म से ही

प्रतिभाशाली नहीं होता है। लेखक को अपने लेखन कौशल को हमेशा निखारना होता है। रामायण के लेखक महर्षि वाल्मिकी के सामने भी यही सवाल था कि क्या लिखे?

आज के लेखकों के सामने भी यही सवाल है? उन्होंने कहा कि लेखक अपने लेखन में सुख व दुख के भावों का संयोजन करता है। अपने परिवेश की अच्छी और बुरी बातों की पहचान करता है और उसे अपने शब्दों में पिरोता है। उन्होंने विद्यार्थियों को लिखने के लिए प्रेरित करते हुए कहा कि भित्ति पत्रिका लिखने के लिए मंच है। यह बहुत महत्वपूर्ण कार्य है, जिसमें विद्यार्थियों को बहुत कुछ सीखने का मौका मिलेगा। विकास साल्यान ने बाल पत्रिका के संपादक मंडल से संपादक और संपादन के कार्य के बारे में चर्चा करते हुए कहा कि संपादन की प्रक्रिया में क्या लें और क्या छोड़ दें आदि तय किया जाता है। ली गई सामग्री को सजाने और संवारने का कार्य किया जाता है।

हिन्दी प्राध्यापक अरुण कुमार कैहरबा ने कहा कि बाल संगम भित्ति पत्रिका विद्यार्थियों को अभिव्यक्ति का मंच प्रदान करने, उनकी रचनात्मक अभिव्यक्ति को विकसित करने, निखारने और संवारने का काम कर रही है। अध्यापकों के मार्गदर्शन में भित्ति पत्रिका का संपादन पूरी तरह से विद्यार्थियों का समूह करता है। इसके रचनाकार भी विद्यार्थी हैं। भित्ति पत्रिका का पहला अंक स्वतंत्रता आंदोलन पर केन्द्रित था। विमोचित दूसरा अंक कन्या शिक्षा विशेषांक है, जिसमें पहली महिला शिक्षिका सावित्रीबाई फुले, फातिमा शेख, पहली चिकित्सक आनंदीबाई जोशी, मदर टेरेसा, लक्ष्मी सहगल, सुचेता कृपलानी, कल्पना चावला, मलाला युसूफजई सहित अनेक महिलाओं के चित्र, जीवन परिचय, कविताएं आदि हैं। पत्रिका में पहले अंक के विमोचन की रिपोर्ट, पहले अंक पर पाठकों की टिप्पणियां आदि बहुत सी सामग्री है।

देस हरियाणा जुड़ने के लिए संपर्क करें		
कुरुक्षेत्र	विकास साल्याण	9050182156
	योगेश शर्मा	9896957994
अंबाला शहर	जयपाल	9466610508
करनाल	अरुण कैहरबा	9466220145
इंद्री	दयालचंद जास्ट	9466220146
घरौंडा	राधेश्याम भारतीय	9315382236
नरेश सैनी		9896207547
कैथल	कुलदीप	9729682692
जीन्द	मंगतराम शास्त्री	9416513872
टोहाना	बलवान सिंह	9466480812
नरवाना	सुरेश कुमार	9416232339
सोनीपत	विरेंद्र वीरू	9467668743
पानीपत	दीपचंद निर्मोही	9813632105
पंचकुला	सुरेंद्र पाल सिंह	9872890401
	जगदीश चन्द्र	9316120057
रोहतक	अविनाश सैनी	9416233992
भिवानी	का. ओमप्रकाश	9992702563
सिरसा	परमानंद शास्त्री	9416921622
हिसार	राजकुमार जांगड़ा	9416509374
महेन्द्रगढ़	अमित मनोज	9416907290
मेवात	सिद्दीक अहमद मेव	9813800164
शिमला	एस आर हरनोट	0177-2625092
		9810171896
राजस्थान (परलीका)	विनोद स्वामी	8949012494
चंडीगढ़		
	पंजाब बुक सेंटर, सैक्टर 22	
दिल्ली	संजना तिवारी, नजदीक श्रीराम सेंटर,	
	आरके मैगजीन, मौरिस नगर, थाने के सामने	
	एनएसडी बुक शॉप	
पीडीएफ के लिए	desharyana.in	